उदयाणुयोगद्दारं १०

पणमिय संतिजिणिंदं घाइयणिस्सेसदोससंघायं ।
उदयाणुयोगदारं किंचि समासेण वण्णेहं ।। १ ।।

एत्तो उदओ कायव्वो– णामादिउदएसु एत्थ केण उदएण पयदं ? णोआगमदो कम्मदव्वउदएण पयदं । सो कम्मदव्वुदओ चउविहो । तं जहा– पयडिउदओ ट्ठिदिउदओ अणुभागउदओ पदेसउदओ चेदि । तत्थ पयडिउदओ दुविहो मूलपयडिउदओ उत्तरपयडिउदओ चेदि । मूलपयडिउदओ चिंतिय वत्तव्वो । उत्तरपयडिउदए पयदं । तत्थ सामित्तं । तं जहा– पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं को वेदओ ? सव्वो छदुमत्थो । पंचण्णं दंसणावरणीयाणं को वेदओ? सरीरपज्जत्तीए दुसमयपज्जत्तमादिं कादूण उवरिमो अण्णदरो तप्पाओग्गो वेदओ । णवरि थीणगिद्धितियस्स देव-णेरइय-अप्पमत्तसंजदा आहारसरीरमुट्ठावियपमत्तसंजदा च अवेदया । अण्णेसिमुवदेसेण एदे पुव्वुत्ता अवेदया होदूण असंखेज्जवस्साउआ च उत्तरविउव्विद-तिरिक्ख-मणुस्सा च अवेदया । सादासादाणमण्णदरो संसारत्थो तप्पाओग्गो वेदओ ।

मिच्छत्तं सव्वो मिच्छाइट्ठी वेदयदि, सम्मामिच्छत्तं सव्वसम्मामिच्छाइट्ठी सम्मत्तं

समस्त दोषसंघातको नष्ट कर देनेवाले शांति जिनेन्द्रको नमस्कार करके मैं कुछ संक्षेपसे उदयानुयोगद्वारका वर्णन करता हूं ।। १ ।।

यहां उदयकी प्ररूपणा की जाती है-- नामउदयादिकोंमें यहां कौनसा उदय प्रकृत है ? यहां नोआगमकर्मद्रव्यउदय प्रकृत है । वह कर्मद्रव्यउदय चार प्रकारका है । यथा--प्रकृतिउदय, स्थितिउदय, अनुभागउदय और प्रदेशउदय । उनमें प्रकृतिउदय दो प्रकार है--मूलप्रकृतिउदय और उत्तरप्रकृतिउदय । मूलप्रकृतिउदयका कथन विचार कर करना चाहिये । उत्तरप्रकृतिउदय प्रकृत है । उसमें स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है । यथा--पांच ज्ञानावरण, चक्षु आदि चार दर्शनावरण, और पांच अन्तरायका वेदक कौन होता है ? इनके वेदक सभी छद्मस्थ जीव होते हैं । निद्रा आदि पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंका वेदक कौन होता है ? शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके द्वितीय समयवर्तीको आदि करके आगेका कोई भी तत्प्रायोग्य जीव उनका वेदक होता है । विशेष इतना है कि देव, नारकी, अप्रमत्तसंयत तथा आहारकशरीरको उत्पन्न करनेवाले प्रमत्तसंयत भी स्त्यानगृद्धित्रिकके अवेदक होते हैं । अन्य आचार्योंके उपदेशके अनुसार ये पूर्वोक्त जीव स्त्यानगृद्धित्रिकके अवेदक होते हैं, इनके अतिरिक्त असंख्यातवर्षायुष्क तथा उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवाले तिर्यंच व मनुष्य भी उसके अवदक होते हैं । साता व असाता वेदनींयका वेदक तत्प्रायोग्य अन्यतर संसारी जीव होता है ।

मिथ्यात्वका वेदन सब ही मिथ्यादृष्टि जीव करते हैं । सम्यग्मिथ्यात्वका वेदन सब

वेदयसम्माइट्ठी सव्वो। अणंताणुबंधीणं मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी वा वेदओ। अपच्चक्खाणकसायाणं असंजदो वेदओ। पच्चक्खाणवरणीयस्स को वेदओ ? असंजदो संजदासंजदो वा वेदओ। तिण्णं संजलणाणं अप्पप्पणो बंधज्झवसाणेसु वट्टमाणओ। लोहसंजलणाए को वेदओ ? अण्णदरो सकसाओ। छण्णं णोकसायाणं को वेदओ ? अण्णदरो णियट्टिम्हि✪ वट्टमाणगो। णवरि पढमसमयदेवो णियमा साद-हस्स-रदीणं वेदगो। पढमसमयणेरइओ णियमा असाद-अरदि-सोगाणं वेदओ। पुरिसवेदं पुरिसो, इत्थिवेदमित्थी, णवुंसयवेदं णवुंसओ वेदेदि।

मणुसाउअं सव्वो मणुस्सो, णिरयाउअं सव्वो णेरइओ, तिरिक्खाउअं सव्वो तिरिक्खो, देवाउअं सव्वो देवो वेदेदि।

मणुसगइं मणुस्सो, णिरयगइं णेरइओ, तिरिक्खगइं तिरिक्खो, देवगइं देवो वेदेदि। जादिणामाणं गदिभंगो। ओरालियसरीरस्स को वेदगो ? ओरालियसरीरो सजोगो। ओरालियसरीरबंधण-संघादाणं ओरालिलयसरीरभंगो। ओरालियसरीरअंगो-वंग-वेउव्विय-आहारसरीर-तदंगोवंग-बंधण-संघादाणं को वेदगो ? सत्थाणे आहारओ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि और सम्यक्त्वका वेदन सब वेदकसम्यग्दृष्टि करते हैं। अनन्तानुबन्धी कषायोंका वेदक मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि होता है। अप्रत्याख्यानावरण कषायोंका वेदक असंयत होता है। प्रत्याख्यानावरणका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक असंयत और संयतासंयत होता है। तीन संज्वलन कषायोंका वेदक अपने अपने बन्धाध्यवसानोंमें वर्तमान जीव होता है। संज्वलनलोभका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक अन्यतर सकषाय जीव होता है। छह नोकषायोंका वेदक कौन होता है ? उनका वेदक निवृत्ति अवस्थामें वर्तमान (मिथ्यादृष्टिसे लेकर अपूर्वकरण तक) अन्यतर जीव होता है। विशेष इतना है कि प्रथम समयवर्ती देव नियमसे सातावेदनीय, हास्य और रतिका वेदक होता है। प्रथम समयवर्ती नारकी नियमसे असातावेदनीय, अरति और शोकका वेदक होता है। पुरुषवेदका वेदन पुरुष, स्त्रीवेदका वेदन स्त्री, और नपुंसकवेदका वेदन नपुंसक करता है।

मनुष्यायुका वेदन सब मनुष्य, नारकायुका वेदन सब नारकी, तिर्यगायुका वेदन सब तिर्यंच और देवायुका वेदन सब देव करते हैं।

मनुष्यगनिका वेदन मनुष्य, नरकगतिका वेदन नारकी, तिर्यग्गतिका वेदन तिर्यंच और देवगतिका वेदन देव करता है। जाति नामकर्मोंके उदयकी प्ररूपणा गतिनामकर्मोंके समान है। औदारिकशरीरका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक औदारिकशरीरसे संयुक्त सयोग जीव होता है। औदारिकशरीरबन्धन और संघातके उदयकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान है। औदारिकशरीरांगोपांग, वैक्रियिकशरीर, आहारकशरीर, इन दोनोंके अंगोपांग, बन्धन और संघातका वेदक कौन होता है ? इनका वेदक स्वस्थानमें वर्तमान आहारक जीव होता है। तैजस और

✪ अ-ताप्रत्योः 'अणियट्टिम्हि' इति पाठः।

तेजा-कम्मइय-तप्पाओग्गबंधण-संघादाणं-को वेदओ ? सव्वो सजोगो ।

छण्णं संठाणाणं को वेदओ ? आहारओ* सजोगो । छण्णं संघडणाणं को वेदओ ? जो जेण आहारओ सो णियमा वेदओ । वण्ण-गंध-रस-फासाणं को वेदओ ? सव्वो सजोगो । तिण्णमाणुपुव्वीणं को वेदओ ? पढमसमयतब्भवत्थो बिदियसमय-तब्भवत्थो वा । तिरिक्खाणुपुव्वीए वेदओ को होदि ? पढमसमय-दुसमय-तिसमय-तब्भवत्थो वा । अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमिणणामाणं को वेदओ ? सव्वो सजोगो ।

उवघादस्स को वेदओ ? आहारओ । परघादस्स को वेदओ ? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो सजोगो । आदावुज्जोवाणं को वेदओ ? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो तप्पा-ओग्गो । उस्सासस्स आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदो जाव चरिमसमयउस्सासणिरोहका-रओ त्ति ताव वेदओ। पसत्थापसत्थविहायगईणं को वेदगो? तसो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्त-यदो सजोगो। तस-बादर-पज्जत्तणामाणं को वेदओ? सजोगो अजोगो वा। पत्तेयसरीरस्स को वेदओ ? आहारओ । थावर-सुहुम-अपज्जत्तणामाणं को वेदओ ? थावर-सुहुम-

---

कार्मण शरीर तथा तत्प्रायोग्य बन्धन व संघातका वेदक कौन होता है ? इनके वेदक सभी सयोग प्राणी होते हैं ।

छह संस्थानोंका वेदक कौन होता है ? उनका वेदक योगसहित आहारक जीव होता है । छह संहननोंका वेदक कौन होता है ? जो जिस संहननसे आहारक है वह नियमसे उसका वेदक होता है । वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्शका वेदक कौन होता है ? उनके वेदक योग सहित सब जीव होते हैं । तीन आनुपूर्वी नामकर्मोंका वेदक कौन होता है ? उनका वेदक प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ अथवा द्वितीय समयवर्ती तद्भवस्थ जीव होता है । तिर्यगानुपूर्वीका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक प्रथम समयवर्ती, द्वितीय समयवर्ती अथवा तृतीय समयवर्ती तद्भवस्थ जीव होता है । अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ और निर्माण नामकर्मोंका वेदक कौन होता है ? इनके वेदक सब योग सहित प्राणी होते हैं ।

उपघातका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक आहारक जीव होता है । परघातका वेदक कौन होता है ? उसका वेदक शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ सयोग प्राणी होता है । आतप और उद्योतका वेदक कौन होता है ? उनका वेदक शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ तत्प्रायोग्य जीव होता है। उच्छ्वासका वेदक आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ जीव जब तक चरम समयवर्ती उच्छ्-वासनिरोधकारक है तब तक होता है। प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगतियोंका वेदक कौन होता है? उनका वेदक शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ योगसे संयुक्त त्रस जीव है। त्रस, बादर और पर्याप्त नाम-कर्मोंका वेदक कौन है? उनका वेदक योगसे सहित और उससे रहित भी जीव होता है। प्रत्येक-शरीरका वेदक कौन है ? उसका वेदक आहारक जीव होता है। स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्त नामकर्मोंका वेदक कौन होता है ? उनके वेदक क्रमशः स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्त

---

* ताप्रतौ 'आहारो' इति पाठः ।

अपज्जत्तया। साहारणसरीरस्स को वेदओ? आहारओ। जसकित्ति♣-सुभग-आदेज्जाणं को वेदओ ? सजोगो अजोगो वा। अजसकित्ति-दुभग अणादेज्जाणं को वेदओ ? अगुणपडिवण्णो अण्णदरो तप्पाओग्गो। तित्थयरणामाए को वेदओ ? सजोगो अजोगो वा। उच्चागोदस्स तित्थयरभंगो। णीचागोदस्स अणादेज्जभंगो। सुस्सर-दुस्सराणं को वेदओ ? भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदो जाव भासाणिरोहस्स अकारओ त्ति। एवं सामित्तं समत्तं।

एगजीवेण कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो त्ति एदाणि अणुयोगद्दाराणि सामित्तादो साहेदूण वत्तव्वाणि। एत्तो अप्पाबहुअं पि जहा पयडिउदीरणाए कदं तहा कायव्वं। णवरि णाणत्तं–मणुसगइणामाए मणुस्साउअस्स च तुल्ला वेदया। एवं सेसाणं पि गदि-आउआणं च। पवाइज्जंतेण उवएसेण हस्स-रदिवेदएहिंतो सादवेदया जीवा विसेसा०। केत्तियमेत्तेण? संखेज्जजीवमेत्तेण। अण्णेण✡ उवएसेण सादवेदएहिंतो हस्स-रदिवेदया विसेसा० असंखे० भागमेत्तेण। जुत्तीए च विसेसाहियत्तं णव्वदे। तं जहा––सव्वो आउअघादओ णियमा जेण असाद-वेदओ हस्स-रदीसु भज्जो तेण सादवेदएहिंतो हस्स-रदिवेदया असंखेज्जा❋ भागा

जीव होते हैं। साधारणशरीरका वेदक कौन होता है? उसका वेदक आहारक जीव होता है। यशकीर्ति, सुभग और आदेयका वेदक कौन होता है? इनका वेदक योग सहित और उससे रहित भी जीव होता है। अयशकीर्ति, दुर्भग और अनादेयका वेदक कौन होता है? उनका वेदक गुणप्रतिपन्नसे भिन्न तत्प्रायोग्य अन्यतर जीव होता है। तीर्थंकर नामकर्मका वेदक कौन होता है? उसका वेदक सयोग व अयोग जीव होता है। उच्चगोत्रके उदयका कथन तीर्थंकर प्रकृतिके समान है। नीचगोत्रके उदयका कथन अनादेयके समान है। सुस्वर और दुस्वरका वेदक कौन होता है? उनका वेदक भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ जीव जब तक भाषाके निरोधको नहीं करता तब तक होता है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा काल, अन्तर तथा नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय; काल, अन्तर और संनिवर्ष; इन अनुयोगद्वारोंका कथन स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये। अल्पबहुत्व भी जैसे प्रकृतिउदीरणामें किया गया है वैसे ही उसे यहां भी करना चाहिये। परंतु यहां इतनी विशेषता है– मनुष्यगति नामकर्म और मनुष्यायुके वेदकोंकी संख्या समान है। इसी प्रकार शेष भी गतिनामकर्मों और आयु कर्मोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये। परस्पराप्राप्त उपदेशके अनुसार हास्य और रतिके वेदकोंसे सातावेदनीयके वेदक जीव विशेष अधिक हैं। कितने मात्रसे वे विशेष अधिक हैं? संख्यात जीव मात्रसे विशेष अधिक हैं। अन्य उपदेशके अनुसार सातावेदनीयके वेदकोंकी अपेक्षा हास्य व रतिके वेदक असंख्यातवें भाग मात्रसे विशेष अधिक हैं। इनकी विशेषाधिकता युक्तिसे भी जानी जाती है। यथा– आयुके घातक सब जीव नियमसे असाता वेदक होकर भी चूंकि हास्य व रतिके वेदनमें भजनीय हैं इसीलिए सातावेदकोंकी

♣ प्रतिषु 'अजसकित्ति-' इति पाठः। ✡ अ-काप्रत्योः 'अणेण' इति पाठः।
❋ काप्रतौ 'असंखेज्जदि' इति पाठः।

विसेसा० । अरदि-सोगवेदया थोवा । असादवेदया विसे० । के० मेत्तेण ? पवाइज्जंतेण उवदेसेण संखेज्जजीवमेत्तेण विसे० । अण्णेण* उवदेसेण असंखे० भागमेत्तेण विसे० । एदाणि पयडिउदीरणअप्पाबहुआदो पयडिउदयअप्पाबहुअस्स णाणत्ताणि✪ । भुजगार-पदणिक्खेव♣-वड्ढीओ णत्थि । जहा पयडिट्ठाणउदीरणा तहा पयडिट्ठाणउदओ वि कायव्वो । एवं पयडिउदओ समत्तो ।

एत्तो ट्ठिदिउदओ दुविहो मूलपयडिट्ठिदिउदओ उत्तरपयडिट्ठिदिउदओ चेदि । मूलपयडिट्ठिदिउदए अट्ठपदं--उदओ दुविहो पओअसा ट्ठिदिक्खएण चेदि । ट्ठिदिक्खओ उदओ▣ सुगमो । जो सो पओअसा उदओ सो दुविहो संपत्तीदो सेचीयादो च । संपत्तीदो✿ एगा ट्ठिदी उदिण्णा, संपहि उदिण्णपरमाणूणमेगसमयावट्ठाणं मोत्तूण दुसमयादिअवट्ठाणंतराणुवलंभादो । सेचीयादो अणेगाओ ट्ठिदीओ उदिण्णाओ, एण्हि जं पदेसग्गं उदिण्णं तस्स दव्वट्ठियणयं पडुच्च पुव्विल्लभावोवयारसंभवादो । एदेण अट्ठपदेण ट्ठिदिउदयपमाणाणुगमो चउव्विहो उक्कस्सो अणुक्कस्सो जहण्णो अजहण्णो चेदि । णाणावरणस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिउदओ तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ दोहि आवलियाहि समऊणाहि ऊणाओ । दंसणावरण-वेयणीय-अंतराइयाणं णाणा-

---

अपेक्षा हास्य व रतिके वेदक असंख्यातवें भागसे विशेष अधिक हैं । अरति व शोकके वेदक स्तोक हैं । उनसे असातावेदनीयके वेदक विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे वे अधिक हैं ? पारम्परित उपदेशके अनुसार वे संख्यात जीव मात्रसे विशेष अधिक हैं । अन्य उपदेशके अनुसार वे असंख्यातवें भाग मात्रसे विशेष अधिक हैं । प्रकृतिउदीरणा सम्बन्धी अल्पबहुत्वसे प्रकृतिउदय सम्बन्धी अल्पबहुत्वमें ये ही कुछ विशेषतायें हैं । भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि यहां नहीं हैं । जैसे प्रकृतिस्थानउदीरणा की गयी है वैसे ही प्रकृतिस्थानउदयको भी करना चाहिये । इस प्रकार प्रकृतिउदय समाप्त हुआ ।

यहां स्थितिउदय दो प्रकारका है—मूलप्रकृतिस्थितिउदय और उत्तरप्रकृतिस्थितिउदय । मूलप्रकृतिस्थितिउदयके विषयमें अर्थपद—प्रयोगजनित और स्थितिक्षयजनितके भेदसे उदय दो प्रकारका है । उनमें स्थितिक्षयजनित उदय सुगम है । जो वह प्रयोगजनित उदय है वह दो प्रकारका है—संप्राप्तिजनित और निषेकजनित । संप्राप्तिकी अपेक्षा एक स्थिति उदीर्ण होती है, क्योंकि, इस समय उदयप्राप्त परमाणुओंके एक समय रूप अवस्थानको छोड़कर दो समय आदि रूप अवस्थानांतर पाया नहीं जाता । निषेककी अपेक्षा अनेक स्थितियां उदीर्ण होती हैं, क्योंकि, इस समय जो प्रदेशाग्र उदीर्ण हुआ है उसके द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा पूर्वीयभावके उपचारकी सम्भावना है । इस अर्थदपके अनुसार स्थितिउदयप्रमाणानुगम चार प्रकार है—उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य । ज्ञानावरणका उत्कृष्ट स्थितिउदय एक समय कम दो आवलियोंसे हीन तीस कोड़ाकोडि सागरोपम प्रमाण है । दर्शनावरण, वेदनीय और अन्तरायके स्थितिउदयका प्रमाण ज्ञानावरणके

---

* अ-काप्रत्योः 'अणेग' इति पाठः । ✪ प्रतिषु 'णाणत्ताणं' इति पाठः । ♣ अ-काप्रत्योः 'णिक्खेवो' इति पाठः । ▣ अ-काप्रत्योः 'चे ट्ठिदिक्खओदओ' इति पाठः । ✿ ताप्रतौ 'संपत्ती' इति पाठः ।

वरणीयभंगो । मोहणीयस्स सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ दोहि आवलियाहि सम✿- ऊणाहि ऊणाओ । आउअस्स तेत्तीसं सागरोवमाणि समऊणाए आवलियाए ऊणाणि । णामा-गोदाणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ बेहि आवलियाहि समऊणाहि ऊणाओ ।

जहण्ण✿ट्ठिदिउदयपमाणाणुगमो । तं जहा– अट्ठण्णं पि ⚲ मूलपयडीणं जहण्णओ ट्ठिदिउदओ एगा ट्ठिदी । एत्तो सामित्तं । तं जहा– उक्कस्सट्ठिदिउदयसामित्तं जहा उक्कस्सट्ठिदिउदीरणाए परूविदं तहा परूवेयव्वं । जहण्णट्ठिदिउद० सामी✻ उच्चदे– णाणावरणीय-दंसणावरणीय-अंतराइयाणं जहण्णट्ठिदिउदओ कस्स ? चरिमसमय-छदुमत्थमादिं कादूण जाव आवलियचरिमसमयछदुमत्थो त्ति । मोहणीयस्स जहण्ण-ट्ठिदिउदओ✱ कस्स ? चरिमसमयसकसायस्स, तमादिं काऊण जाव आवलियचरिम-समयसकसाओ त्ति । णामा-गोदाणं जहण्णट्ठिदिउदओ कस्स ? पढमसमयअजोगिस्स, तमादिं कादूण जाव चरिमसमयभवसिद्धिओ त्ति । आउअ-वेदणीयाणं जहण्णट्ठिदिउदओ कस्स ? पढमसमयअप्पमत्तस्स, तमादिं कादूण जाव चरिमसमयभवसिद्धिओ त्ति । आउअस्स अण्णो वि जहण्णट्ठिदिउदओ अत्थि जस्स आउअमुदयावलियं पविट्ठं ।

समान है । मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिउदय एक समय कम दो आवलियोंसे हीन सत्तर कोडाकोडि सागरोपम प्रमाण है । आयुका उत्कृष्ट स्थितिउदय एक समय कम एक आवलीसे हीन तेतीस सागरोपम प्रमाण है । नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिउदय एक समय दो आवलियोंसे हीन बीस कोडाकोडि सागरोपम मात्र है ।

जघन्य स्थितिउदयके प्रमाणानुगमका कथन करते हैं । यथा– आठों ही मूल प्रकृतियोंके जघन्य स्थितिउदयका प्रमाण एक स्थिति है । अब यहां स्वामित्वकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है– उत्कृष्ट स्थितिउदयके स्वामित्वकी प्ररूपणा जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें की गयी है वैसे ही यहां भी करना चाहिये । जघन्य स्थितिउदयके स्वामित्वका कथन करते हैं–– ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तरायका जघन्य स्थितिउदय किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थको आदि लेकर जिसके अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ होनेमें आवली मात्र काल तक शेष है उसके होता है । मोहनीयका जघन्य स्थितिउदय किसके होता है ? वह अंतिम समयवर्ती सकषाय जीवके तथा उसको आदि लेकर जिसके चरम समयवर्ती सकषाय होनेमें आवली मात्र काल तक शेष है उसके होता है । नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिउदय किसके होता है ? वह प्रथम समयवर्ती अयोगीके तथा उसको आदि करके चरम समयवर्ती भव्यसिद्धिक तकके होता है । आयु और वेदनीयका जघन्य स्थितिउदय किसके होता है ? वह प्रथम समयवर्ती अप्रमत्तके तथा उसको आदि करके चरम समयवर्ती भव्यसिद्धिक तकके होता है । आयुका अन्य भी जघन्य स्थितिउदय उसके होता है जिसका आयु कर्म उदयावलीमें प्रविष्ट है ।

✿ ताप्रतौ (सम) इति पाठः । ✿ ' एत्तो सामित्तं ' इत्यतः प्राक्तनोऽयं पाठस्ताप्रतौ नास्ति ।
⚲ अप्रतौ ' अट्ठं पि ' इति पाठः । ✻ अ-का-प्रत्योः ' -ट्ठिदिउदओ सामी० ' इति पाठः ।
✱ ताप्रतौ ' -ट्ठिदि (ओ) उदओ ' इति पाठः ।

एयजीवेण कालो । तं जहा– जहा उक्कस्सट्ठिदिउदीरणाकालो परूविदो तहा उक्कस्सट्ठिदिउदयकालो वि परूवेयव्वो । जहण्णट्ठिदिउदओ । तं जहा– णामा-गोद-वेदणिज्जाणं जहण्णट्ठिदिउदओ♠ केवचिरं० ? जहण्णुक्क०▣ अंतोमुहुत्तं । णवरि वेयणीय० जह० एयसमओ, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा । आउअस्स जह० ट्ठिदिउदओ केव० ? जह० एगावलिया, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा । चदुण्णं पि घाइकम्माणं जह० केवचिरं०? जहण्णुक्क० आवलिया✳। सत्तण्णं कम्माणमजहण्णट्ठिदिउदयकालो अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो । मोहणीयं वेयणीयं च पडुच्च सादिओ सपज्जवसिदो । तस्स जो सो सादिओ सपज्जवसिदो❋ तस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। आउअस्स अजहण्णट्ठिदिवेदयकालो जह० अंतोमुहुत्तमेगसमओ वा, उक्क० तेत्तीससागरोवमाणि आवलियूणाणि ।

एयजीवेण अंतरं । तं जहा– जहा✪ उक्कस्सट्ठिदिउदीरयंतरं परूवियं तहा उक्कस्सट्ठिदिवेदयंतरं परूवेयव्वं। आउअस्स जहण्णट्ठिदिवेदयंतरं जह० खुद्दाभवग्गहणं आवलियूणं एगसमओ वा, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियूणाणि । पंचण्णं कम्माणं जहण्णट्ठिदिवेदयंतरं णत्थि । मोहणीय-वेदणीयाणं जहण्णट्ठिदिवेदयंतरं जह०

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा करते हैं । यथा– जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणाके कालकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही उत्कृष्ट स्थितिउदयके कालकी भी प्ररूपणा करना चाहिये । जघन्य स्थितिउदयकी प्ररूपणा की जाती है । यथा– नाम, गोत्र और वेदनीयका जघन्य स्थिति-उदय कितने काल रहता है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त रहता है । विशेष इतना है कि वेदनीयके जघन्य स्थितिउदयका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि मात्र है । आयुकर्मका जघन्य स्थितिउदय कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक आवली और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि मात्र रहता है । चारों ही घातिया कर्मोंका जघन्य स्थितिउदय कितने काल रहता है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक आवली मात्र रहता है । सात कर्मोंके अजघन्य स्थितिउदयका काल अनादि-अपर्यवसित व अनादि-सपर्यवसित है । मोहनीय व वेदनीयकी अपेक्षा वह सादि-सपर्यवसित है । उसका जो सादि-सपर्यवसित काल है उसका प्रमाण जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । आयुकी अजघन्य स्थितिका वेदककाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त अथवा एक समय और उत्कर्षसे आवली कम तेतीस सागरोपम मात्र है ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तरका कथन करते हैं । यथा– जिस प्रकार उत्कृष्ट स्थितिउदीरकके अन्तरकी प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकार उत्कृष्ट स्थितिवेदकके अन्तरकी भी प्ररूपणा करना चाहिये । आयुकर्मके जघन्य स्थितिवेदकका अन्तर जघन्यसे आवली कम क्षुद्रभवग्रहण अथवा एक समय और उत्कर्षसे आवली कम तेतीस सागरोपम मात्र होता है । पांच कर्मोंके जघन्य स्थितिवेदकका अन्तर नहीं होता । मोहनीय और वेदनीयके जघन्य स्थितिवेदकका अंतर जघन्य–

♠ प्रतिषु '-ट्ठिदिउदीरओ' इति पाठः । ▣ प्रतिषु 'अणुक्क०' इति पाठः । ✳ अप्रतौ 'आवलियाए', काप्रतौ 'आवलिया०' इति पाठः । ❋ अ-काप्रत्योः 'तस्स जो सो सादिओ सपज्जवसिदो' इत्येतावान् पाठो नोपलभ्यते । ✪ ताप्रतौ नोपलभ्यते पदमिदम् ।

अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं।

णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो त्ति एदाणि अणुयोगद्दाराणि जहा उक्कस्सट्ठिदिउदीरणाए✿ कदाणि तहा उक्कस्सट्ठिदिउदए कादव्वाणि। एदाणि चेव जहण्णट्ठिदिउदए वत्तइस्सामो। तं जहा-भंगविचए ताव अट्ठपदं। जो जहण्णट्ठिदीए वेदओ सो अजहण्णट्ठिदीए णियमा अवेदओ, जो अजहण्णट्ठिदीए वेदगो सो जहण्णट्ठिदीए णियमा अवेदओ,। जाओ पयडीओ वेदयदि तासु पयदं, अवेदएसु अव्ववहारो। एदेण अट्ठपदेण आउअ-वेदणिज्जाणं जहण्णियाए ट्ठिदीए णाणाजीवा वेदया णियमा अत्थि। सेसाणं कम्माणं जहण्णट्ठिदीए सिया सव्वे जीवा अवेदया, सिया अवेदया च वेदओ च, सिया अवेदया च वेदया च। एवं तिण्णिभंगा। अजहण्णियाए✽ ट्ठिदीए वेदयाणं तव्विवरीएण तिण्णिभंगा वत्तव्वा।

णाणाजीवेहि कालो-आउअ-वेदणिज्जाणं जहण्णट्ठिदिवेदया केवचिरं०? सव्वद्धा। णामा-गोदाणं जहण्णट्ठिदिवेदया केवचिरं०? णाणाजीवे पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। सेसाणं कम्माणं जहण्णट्ठिदिवेदया जह० आवलि०उवसामगं पडुच्च मोहणीयस्स एगसमओ वा, उक्क० अंतोमुहुत्तं। अट्ठण्णं पि कम्माणं अजहण्णट्ठिदिवेदयाणं णाणा-

---

से अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन मात्र होता है।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और संनिकर्ष; इन कथन अनुयोगद्वारोंका जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें किया गया है वैसे ही उत्कृष्ट स्थितिउदयमें भी करना चाहिये। इन्हींका कथन जघन्य स्थितिउदयमें किया जाता है। यथापहिले भंगविचयमें अर्थपद बतलाते हैं। जो जीव जघन्य स्थितिका वेदक होता है वह अजघन्य स्थितिका नियमसे अवेदक होता है, जो अजघन्य स्थितिका वेदक होता है वह जघन्य स्थितिका नियमसे अवेदक होता है। जिन प्रकृतियोंका वेदन करता है वे प्रकृत हैं, अवेदकोंमें व्यवहार नहीं है। इस अर्थपदके अनुसार आयु और वेदनीयकी जघन्य स्थितिके वेदक नाना जीव नियमसे हैं। शेष कर्मोंकी जघन्य स्थितिके कदाचित् सब जीव अवेदक, कदाचित् बहुत अवेदक व एक वेदक, तथा कदाचित् अवेदक भी बहुत और वेदक भी बहुत; इस प्रकार तीन भंग हैं। इनकी अजघन्य स्थितिके वेदकोंके तीन भंग पूर्वोक्त भंगोंकी अपेक्षा विपरीत (कदाचित् सब जीव वेदक, कदाचित् बहुत वेदक व एक अवेदक, तथा कदाचित् बहुत वेदक और बहुत अवेदक भी) क्रमसे कहने चाहिये।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल—आयु और वेदनीयकी जघन्य स्थितिके वेदक कितने काल रहते हैं? सर्वकाल रहते हैं। नाम व गोत्र कर्मोंकी जघन्य स्थितिके वेदक कितने काल रहते हैं? वे नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक रहते हैं शेष कर्मोंकी जघन्य स्थितिके वेदक जघन्यसे आवली मात्र, अथवा उपशामककी अपेक्षा मोहनीयकी उक्त स्थितिके वेदक जघन्यसे एक समय तथा उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र रहते हैं। आठों ही कर्मों सम्बन्धी

✿ अ-काप्रत्योः 'उदीरणा' इति पाठः।   ✽ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-का-ताप्रतिषु 'च तिण्णिभंगा अजहण्णियाए' इति पाठः।

जीवे पडुच्च सव्वद्धं ।

णाणाजीवेहि अंतरं– आउअ-वेदणिज्जाणं जहण्णट्ठिदिवेदयाणं✡ णत्थि अंतरं। सेसाणं कम्माणं जहण्णट्ठिदिवेदगंतरं❀ जह० एगसमओ, उक्क० छम्मासा ।

सण्णियासो । तं जहा– णाणावरणस्स जहण्णट्ठिदिवेदओ मोहणीयस्स अवेदओ, णामा-गोदाणं णियमा अजहण्णट्ठिदिवेदओ, ✲जहण्णादो अजहण्णा असंखेज्जगुणब्भहिया। सेसाणं कम्माणं णियमा जहण्णट्ठिदिवेदओ। दंसणावरणंतराइयाणं णाणावरण-भंगो। वेदणीयस्स जहण्णट्ठिदिवेदओ चदुण्णं घादिकम्माणं सिया वेदओ सिया णोवे-दओ। जदि वेदओ सिया जहण्णं सिया अजहण्णं वेदेदि। जदि अजहण्णं दुगुणमादिं कादूण णिरंतरं जाव असंखे० गुणं वेदेदि। आउअस्स णियमा जहण्णं वेदेदि। णामा-गोदा जहण्णमजहण्णं वा वेदेदि। जदि अजहण्णं णियमा असंखे० गुणं वेदेदि। जहा वेयणीयं घाइकम्मेहि सण्णिकासिदं तहा आउअं पि घाइकम्मेहि सण्णिकासियव्वं।

आउअस्स जहण्णट्ठिदिवेदओ णामा-गोद♣-वेदणिज्जाणं जहण्णट्ठिदिमजहण्णट्ठिदिं वा वेदेदि। जदि अजहण्णं णियमा असंखे० गुणं। णामा-गोदाणं जहण्णट्ठिदिवेदओ

अजघन्य स्थितिके वेदकोंका काल नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल है।

नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर– आयु और वेदनीयकी जघन्य स्थितिके वेदकोंका अन्तर नहीं होता। शेष कर्मोंकी जघन्य स्थितिके वेदकोंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास प्रमाण होता है।

अब संनिकर्षकी प्ररूपणा की जाती है। यथा– ज्ञानावरणकी जघन्य स्थितिका वेदक मोहनीयका अवेदक तथा नाम व गोत्रकी नियमसे अजघन्य स्थितिका वेदक होता है। जघन्यकी अपेक्षा वह अजघन्य स्थिति असंख्यातगुणी अधिक है। वह शेष कर्मोंकी नियमसे जघन्य स्थितिका वेदक होता है। दर्शनावरण और अन्तरायके संनिकर्षकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है। वेदनीयकी जघन्य स्थितिका वेदक चार घाति कर्मोंका कदाचित् वेदक और कदाचित् नोवेदक होता है। यदि वह वेदक होता है तो कदाचित् जघन्य और कदाचित् अजघन्य स्थितिका वेदन करता है। यदि वह अजघन्य स्थितिका वेदन करता है तो दुगुणी स्थितिको आदि करके निरन्तर असंख्यातगुणी तकका वेदन करता है। वह आयु कर्मकी नियमसे जघन्य स्थितिका वेदन करता है, नाम व गोत्रकी जघन्य अथवा अजघन्यका वेदन करता है। यदि वह अजघन्यका वेदन करता है तो नियमसे असंख्यातगुणीका वेदन करता है। जिस प्रकार घातिया कर्मोंके साथ वेदनीयका संनिकर्ष बतलाया गया है उसी प्रकारसे घातिया कर्मोंके साथ आयुका भी संनिकर्ष बतलाना चाहिये।

आयु कर्मकी जघन्य स्थितिका वेदक जीव नाम, गोत्र और वेदनीयकी जघन्य स्थिति अथवा अजघन्य स्थितिका वेदन करता है। यदि वह अजघन्य स्थितिका वेदन करता है तो नियमसे

✡ प्रतिषु 'वेदणीयाणं' इति पाठः। ❀ अप्रतौ 'वेदगंतं', काप्रतौ 'वेदगं', ताप्रतौ 'वेदगत्तं' इति पाठः। ✲ अ-का-ताप्रतिषु 'जहण्णादो अजहण्णा असंखेज्जगुणब्भहिया। सेसाणं कम्माणं णियमा जहण्णट्ठिदिवेदओ' इत्ययं पाठो नास्ति, मप्रतितोऽत्र योजितः सः। ♣ अप्रतौ 'गोदाणं' इति पाठः।

आउअ-वेदणिज्जाणं णियमा जहण्णट्ठिदिं वेदेदि। सेसाणमवेदगो। मोहणिज्जस्स जहण्णट्ठिदिवेदओ आउअ-वेदणिज्जाणं णियमा जहण्णट्ठिदिवेदगो। सेसाणं कम्माणं णियमा अजहण्णं असंखेज्जगुणं वेदगो। एवं सण्णियासो समत्तो।

एत्तो अप्पाबहुअं। तं जहा– जहा उक्कस्सट्ठिदिउदीरणाए अप्पाबहुअं कदं तहा उक्कस्सट्ठिदउदीए कायव्वं। जहण्णट्ठिदिउदए अप्पाबहुअं। तं जहा– अट्ठण्णं पि कम्माणं जहण्णट्ठिदिउदओ तत्तियो* चेव। एवं अप्पाबहुअं गदं। जहा ट्ठिदिउदीरणाए भुजगारो पदणिक्खेवो वड्ढी च कदा तहा एत्थ वि ट्ठिदिउदए कायव्वा। एवं मूलपयडिट्ठिदिउदओ समत्तो।

एत्तो उत्तरपयडिट्ठिदिउदओ– तत्थ अट्ठपदं पुव्वं व कायव्वं। जहा उक्कस्सट्ठिदि-उदीरणाए पमाणाणुगमो कदो तहा उक्कस्सट्ठिदिउदए वि पमाणाणुगमो कायव्वो। णवरि उदयट्ठिदीए अब्भहियं। जहण्णट्ठिदिउदयपमाणाणुगमं वत्तइस्सामो। तं जहा– पंचणाणावरणीय-चदुदंसणावरणीय-सादासादवेदणीय-लोभसंजलण-तिण्णिवेद-सम्मत्त-मिच्छत्त-आउचदुक्क--मणुसगइ-पंचिंदियजादि–तस-बादर-पज्जत्त–जसकित्ति–सुभगा-देज्ज-तित्थयर-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं जहण्णट्ठिदिउदओ एगा ट्ठिदी एगसमयकालो।

असंख्यातगुणीका वेदन करता है। नाम व गोत्रकी जघन्य स्थितिका वेदक जीव आयु और वेदनीयकी नियमसे जघन्य स्थितिका वेदन करता है, शेष कर्मोंका वह अवेदक है। मोहनीयकी जघन्य स्थितिका वेदक जीव आयु और वेदनीयकी नियमसे जघन्य स्थितिका वेदक तथा शेष कर्मोंकी नियमसे असंख्यातगुणी अजघन्य स्थितिका वेदक होता है। इस प्रकार संनिकर्ष समाप्त हुआ।

यहां अल्पबहुत्वका कथन करते हैं। यथा– जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें अल्पबहुत्व किया गया है वैसे ही उत्कृष्ट स्थितिउदयमें भी उसे करना चाहिये। जघन्य स्थितिउदयमें अल्पबहुत्वका कथन करते हैं। यथा– आठों ही कर्मोंकी जघन्य स्थितिका उदय उतना ही है अर्थात् समान है। इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिका कथन जैसे स्थितिउदीरणामें किया गया है वैसे ही यहां स्थितिउदयमें भी करना चाहिये। इस प्रकार मूलप्रकृतिस्थितिउदय समाप्त हुआ।

यहां उत्तरप्रकृतिस्थितिउदयकी प्ररूपणा की जाती है– उसमें अर्थपद पहिलेके ही समान करना चाहिये। जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें प्रमाणानुगम किया गया है वैसे ही उत्कृष्ट स्थिति-उदयमें भी प्रमाणानुगम करना चाहिये। विशेष इतना है कि उदयस्थितिमें अधिक है। जघन्य स्थितिके उदयका प्रमाणानुगम कहते हैं। वह इस प्रकार है–पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, साता-वेदनीय, असातावेदनीय, संज्वलनलोभ, तीन वेद, सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, चार आयु कर्म, मनुष्य-गति, पंचेन्द्रियजाति, त्रस, बादर, पर्याप्त, यशकीर्ति, सुभग, आदेय, तीर्थंकर, उच्चगोत्र ओर पांच अन्तराय; इनकी जघन्य स्थितिका उदय एक समय कालवाली एक स्थिति मात्र है। संज्वलनक्रोध,

---

* अ-काप्रत्योः 'तत्तिया' इति पाठः।

कोह-माण-मायासंजलणाणं जहण्णट्ठिदिउदओ दोण्णिट्ठिदीओ। जट्ठिदिउदओ आवलिया समयाहिया। सेसाणं कम्माणं जहा जहण्णट्ठिदिउदीरणाए पमाणाणुगमो कदो तहा जहण्णट्ठिदिउदए वि कायव्वो। एवमद्धाछेदो समत्तो।

एत्तो सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो अप्पाबहुअं चेदि एदाणि अणुओगद्दाराणि जहा उक्कस्सट्ठिदिउदीरणाए कदाणि तहा उक्कस्सट्ठिदिउदए वि कायव्वाणि। जहण्णट्ठिदिउदीरणादो जं किंचि णाणत्तं पि सामित्तादो साधेदूण कायव्वं। भुजगार-पदणिक्खेव-वड्ढिउदओ च जहा ट्ठिदिउदीरणाए कदो तहा ट्ठिदिउदए वि कायव्वो। एवं ट्ठिदिउदओ समत्तो।

एत्तो अणुभागउदओ दुविहो मूलपयडिउदओ उत्तरपयडिउदओ चेदि। तत्थ मूलपयडिअणुभागउदए चउव्वीस अणुयोगद्दाराणि परूविय पुणो भुजगार-पदणिक्खेव-वड्ढीसु परूविदासु मूलपयडिउदओ समत्तो भवदि। एत्तो उत्तरपयडिअणुभागुदए तत्थ पमाणाणुगमो जहा अणुभागुदीरणाए परूविदो तहा एत्थ वि परूवेयव्वो। पच्चय-परूवणा ठाणपरूवणा सुहासुहपरूवणा त्ति एदेहि अणुयोगद्दारेहि अणुभागपरूवणं काऊण तदो सामित्तं जहा अणुभागउदीरणाए कदं तहा कायव्वं। णवरि जहण्णसामित्त णाणत्तं वत्तइस्सामो। तं जहा- पंचणाणावरणीय-चत्तारिदंसणावरणीय-सम्मत्त-

---

मान और मायाकी जघन्य स्थितिका उदय दो स्थिति मात्र होता है। जस्थितिउदय एक समय अधिक आवली मात्र होता है। शेष कर्मोंके प्रमाणानुगमका कथन जैसे जघन्य स्थितिउदीरणामें किया गया है वैसे ही जघन्य स्थितिउदयमें भी करना चाहिये। इस प्रकार अद्धाछेद समाप्त हुआ।

यहां स्वामित्व, काल, अन्तर नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर, संनिकर्ष और अल्पबहुत्व; इन अनुयोगद्वारोंका कथन जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणामें किया गया है वैसेही उत्कृष्ट स्थितिउदयमें भी करना चाहिये। यहां जघन्य स्थितिउदीरणाकी अपेक्षा जो कुछ विशेषता है उसे भी स्वामित्वसे सिद्ध करके कहना चाहिये। भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिउदय जैसे स्थितिउदीरणामें किया गया है वैसे ही उसे स्थितिउदयमें भी करना चाहिये। इस प्रकार स्थितिउदय समाप्त हुआ।

यहां अनुभाग उदय दो प्रकार है- मूलप्रकृतिउदय और उत्तरप्रकृतिउदय। उनमेंसे मूलप्रकृतिअनुभागउदयमें चौबीस अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा करके पश्चात् भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिकी प्ररूपणा कर देनेपर मूलप्रकृतिअनुभागउदय समाप्त हो जाता है। यहां उत्तरप्रकृति-अनुभागउदयमें उनमेंसे प्रमाणानुगमकी प्ररूपणा जैसे अनुभागउदीरणामें की गयी है वैसे ही यहां भी करना चाहिये। प्रत्ययप्ररूपणा, स्थानप्ररूपणा और शुभाशुभप्ररूपणा इन तीन अनुयोग-द्वारोंके द्वारा अनुभागकी प्ररूपणा करके तत्पश्चात् स्वामित्व जैसे अनुभागउदीरणामें किया गया है वैसे ही उसे यहां अनुभागउदयमें भी करना चाहिये। विशेष इतना है कि जघन्य स्वामित्वमें कुछ विशेषता है, उसे कहते हैं। यथा- पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, सम्यक्त्व, तीन वेद, संज्वलन-

तिण्णिवेद-लोहसंजलण-पंचअंतराइणं जहण्णओ अणुभागउदओ कस्स ? जो एदेसिं कम्माणं जहण्णअणुभागउदी ओ होदूण तदो आवलियाए अदिक्कंताए सो चेव जहण्णाणुभागवेदओ होदि । एवं जहण्णाणुभागुदीरणासामित्तादो जहण्णाणुभागउदयस्स सामित्तस्स णाणत्तं । एयजीवेण कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो अप्पाबहुअं भुजगारो पदणिक्खेवो वड्ढि त्ति एदेहि अणुयोगद्दारेहि अणुभागउदीरणादो अणुभागउदयस्स णाणत्ताभावादो जहा एदेदि अणियोगद्दारेहि अणुभागउदीरणा परूविदा तहा अणुभागउदओ परूवेयव्वो । एवमणुभागउदओ समत्तो ।

एत्तो पदेसउदओ दुविहो मूलपयडिपदेसउदओ उत्तरपयडिपदेसउदओ चेदि । तत्थ मूलपयडिपदेसउदओ सव्वाणुओणद्दारेहि जाणिऊण परूवेयव्वो । उत्तरपयडिउदए पयदं । सामित्तं जाणावणट्ठं इमाओ एत्थ दस गुणसेडीओ परूवेदव्वाओ । तं जहा--

सम्मत्तुप्पत्तीए सावय विरदे अणंतकम्मंसे ।
दंसणमोहक्खवए कसायउवसामए य उवसंते ॥ १ ॥
खवए य खीणमोहे जिणे य णियमा भवे असंखेज्जा ।
तव्विवरीओ कालो संखेज्जगुणाए सेडीए(१) ॥ २ ॥

एदाहि दोहि गाहाहि दसण्णं गुणसेडीणं परूवणं णिक्खेवं च परूवेदूण तदो

लोभ और पांच अन्तराय, इनका जघन्य अनुभागउदय किसके होता है ? जो जीव इन कर्मोंका जघन्य अनुभागउदीरक होकर तत्पश्चात् एक आवलीको बिताता है वही उक्त आवलीके बीतनेपर उनके जघन्य अनुभागका वेदक होता है। इस प्रकार जघन्य अनुभागउदीरणाके स्वामीकी अपेक्षा जघन्य अनुभागउदयके स्वामीमें विशेषता है । एक जीवकी अपेक्षा काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर, संनिकर्ष, अल्पबहुत्व, भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि; इन अनुयोगद्वारोंमें अनुभागउदीरणाकी अपेक्षा चूंकि अनुभागउदयमें कोई भेद नहीं है, अत एव इन अनुयोगद्वारोंके द्वारा जैसे अनुभागउदीरणाकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही अनुभागउदयकी भी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार अनुभागउदय समाप्त हुआ ।

यहां प्रदेशउदय दो प्रकारका है–मूलप्रकृतिप्रदेशउदय और उत्तरप्रकृतिप्रदेशउदय । उनमें मूलप्रकृतिप्रदेशउदयकी प्ररूपणा सब अनुयोगद्वारोंके द्वारा जानकर करना चाहिये । उत्तरप्रकृतिउदय प्रकृत है । स्वामित्वके ज्ञापनार्थ यहां इन दस गुणश्रेणियोंकी प्ररूपणा की जाती हैं । यथा–

सम्यक्त्वोत्पत्ति, श्रावक, विरत (संयत), अनन्तकर्मांश (अन्तानुबन्धिविसंयोजक), दर्शनमोहक्षपक, कषायोपशामक, उपशान्तकषाय, क्षपक, क्षीणमाह और जिन; इनके क्रमशः उत्तरोत्तर असंख्यातगुणी निर्जरा होती हैं । किन्तु इस निर्जराका काल संख्यातगुणित श्रेणि रूपसे विपरीत है । जैसे–जिन भगवान्की गुणश्रेणिनिर्जराका जितना काल है उससे क्षीणकषायकी गुणश्रेणिनिर्जराका काल संख्यातगुणा है, इत्यादि ॥ १–२ ॥

इन दो गाथाओंके द्वारा दस गुणश्रेणियोंकी प्ररूपणा और निक्षेपकी प्ररूपणा करके तत्पश्चात् जो

---

(१) ष. ख. पु. १२ पृ. ७८.

जाओ गुणसेडीओ अण्णभवं संकामंति ताओ वत्तइस्सामो । तं जहा— उवसमसम्मत्त-गुणसेडी संजदासंजदगुणसेडी अधापमत्तगुणसेडी एदाओ तिण्णिगुणसेडीओ अप्पसत्थ-मरणेण वि मदस्स परभवे दिस्संति । सेसासु गुणसेडीसु झीणासु अप्पअत्थमरणं भवे ▣ । एत्तो सामित्तं कायव्वं । तं जहा— आभिणिबोहियणाणावरणस्स उक्कस्सपदेसउदओ कस्स ? जो गुणिदकम्मंसिओ मणुस्सो गब्भादिअट्ठवस्सेहि संजमं पडिवण्णो, तत्थ अंतोमुहुत्तमच्छिय सव्वलहुं चरित्तमोहक्खवणाए उवट्ठिदो तस्स चरिमसमयछदुमत्थस्स आभिणिबोहियणाणावरणस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ । सुद-मणपज्जव-केवलणाणा-वरणाणं चक्खु-अचक्खु-केवलदंसणावरणाणं च मदिआवरणभंगो । ओहिणाण–ओहि-दंसणाणं पि मदिआवरणभंगो चेव । णवरि जस्स ओहिलंभो णत्थि तस्स उक्कस्सं सामित्तं दादव्वं । णिद्दा-पयलाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? गुणिदकम्मंसियस्स उवसंतकसायस्स । थीणगिद्धितियस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? दोण्णिगुण-सेडिसीसगगुणिद ✠ कम्मंसियस्स ।

सादासादाणं उक्कस्सपदेसओ कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स चरिमसमयभवसिद्धि-यस्स । मिच्छत्तस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? गुणिदकम्मंसियस्स दोगुण-

---

गुणश्रेणियां अन्य भवमें संक्रमणको प्राप्त होती हैं उनको बतलाते हैं । यथा – उपशमसम्यक्त्व गुणश्रेणि, संयतासंयत गुणश्रेणि और अधःप्रमत्त गुणश्रेणि; ये तीन गुणश्रेणियां अप्रशस्त मरणसे भी मृत्युको प्राप्त हुए जीवके परभवमें दिखती हैं । शेष गुणश्रेणियोंके क्षीण होनेपर अप्रशस्त मरण होता है ।

यहां स्वामित्वका कथन करते हैं । यथा– आभिनिबोधिकज्ञानावरणके उत्कृष्ट प्रदेशका उदय किसके है ? जो गुणितकर्मांशिक मनुष्य गर्भसे लेकर आठ वर्षोंमें संयमको प्राप्त हुआ है तथा उस अवस्थामें अन्तर्मुहूर्त रहकर सर्वलघु कालमें चारित्रमोहनीयके क्षपणमें उद्यत हुआ है उस अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थके आभिनिबोधिकज्ञानावरणके उत्कृष्ट प्रदेशका उदय होता है । श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण और केवलज्ञानावरण तथा चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणके उत्कृष्ट प्रदेश उदयकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । अवधि-ज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणके भी उत्कृष्ट प्रदेश उदयकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके ही समान है । विशेष इतना है कि जिसके अवधिलब्धि नहीं है उसके उनका उत्कृष्ट स्वामित्व चाहिये । निद्रा और प्रचलाका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह गुणितकर्मांशिक उपशान्तकषायके होता है । स्त्यानगृद्धि आदि तीनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है? वह दो गुणश्रेणिशीर्षक गुणितकर्मांशिकके होता है ।

साता और असाता वेदनीयका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है? जो गुणितकर्मांशिक जीव अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिक है उसके उनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है । मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह दो गुणश्रेणिशीर्षवाले गुणितकर्मांशिकके होता है ।

▣ क. प्र. ५, १०. ✠ मप्रतिपाठोऽयम् । अप्रतौ ' सी गुणिद ', काप्रतौ ' सीसयस्स गुणिद ', ताप्रतौ ' सीस (यस्स-) गुणिद ' इति पाठः ।

सेडिसीसयस्स । सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स उदिण्णसंजमासंजम-संजमगुणसेडिसीसयस्स । सम्मत्तस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स चरिमसमयअक्खीणदंसणमोहणीयस्स ।

अणंताणुबंधिचउक्कस्स मिच्छत्तभंगो । अट्ठण्णं पि कसायाणमुक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? जो कसाय(१)उवसामओ से काले अंतरं काहिदि त्ति मदो देवो जादो तस्स अंतोमुहुत्तमुववण्णस्स जाधे गुणसेडिसीसय(१)मुदिण्णं ताधे उक्कस्सओ उदओ* । हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? जो कसायउवसामओ से काले अंतरं काहिदि त्ति मदो देवो जादो तस्स जाधे अपच्छिमं गुणसेडिसीसयमुदयमागदं ताधे उक्कस्सओ उदओ । अपज्जत्तपाओग्ग-जहण्णिया हस्स-रदिवेदगद्धा थोवा । जेण कालेण गुणसेडिसीसगमुदयमेदि सो कालो संखेज्जगुणो । उक्कस्सिया हस्स-रदिवेदगद्धा सखेज्जगुणा । एदेण कारणेण जस्स हस्स-रदीणमुक्कस्सओ उदओ तस्स चेव अरदि-सोगाणं पि उक्कस्सओ उदओ कायव्वो । अधवा छण्णमेदासिं हस्सादियाणं उक्कस्सओ पदेसुदओ चरिमसमयअपुव्वकरणखवयस्स । तिण्णं वेदाणं उक्कस्सओ उदओ कस्स ? चरिमसमयउदए वट्टमाणस्स खवयस्स गुणिदकम्मंसियस्स । तिण्णं संजलणाण-**

सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह संयमासंयम और संयम गुणश्रेणि-शीर्षके उदय युक्त गुणितकर्मांशिकके होता है । सम्यक्त्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है? जो अन्तिम समयवर्ती अक्षीणदर्शनमोह है ऐसे गुणितकर्मांशिक जीवके सम्यक्त्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है ।

अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है । आठों ही कषायोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? जो कषायउपशामक जीव अनन्तर कालमें अन्तरको करेगा, इस स्थितिमें वर्तमान रहकर मरणको प्राप्त होता हुआ देव उत्पन्न हुआ है उसके उत्पन्न होनेके अन्तर्मुहूर्तमें जब गुणश्रेणिशीर्षक उदीर्ण होता है तब उसके उनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है । हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? जो कषायउपशामक जीव अनन्तर कालमें अन्तरको करेगा, इस स्थितिमें मरणको प्राप्त होकर देव उत्पन्न हुआ है उसके जब अन्तिम गुणश्रेणिशीर्षक उदयको प्राप्त होता है तब उसके उनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है । हास्य और रतिका अपर्याप्त योग्य जघन्य वेदककाल स्तोक है । जिस कालमें गुणश्रेणिशर्षक उदयको प्राप्त होता है वह संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट हास्य-रतिवेदक-काल संख्यातगुणा है । इस कारण जिसके हास्य व रतिका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है उसके ही अरति और शोकका भी उत्कृष्ट उदय करना चाहिये । अथवा इन हास्यादि छह प्रकृतियोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय अन्तिम समयवर्ती अपूर्वकरण क्षपकके होता है । तीन वेदोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह उदयके अन्तिम समयमें वर्तमान क्षपक गुणितकर्मांशिकके होता है ।

---

(१) अप्रत 'गुणसेडीए सीसय-', का-ताप्रत्योः 'गुणसेडीसीसय-' इति पाठः । * अ-काप्रत्योः 'उक्कस्स-ओदइओ' इति पाठः । ** अप्रतौ 'असखेज्जगुणो' इति पाठः ।

मुक्कस्सओ उदओ कस्स ? सग-सगउदएण खवगसेडिं चडिय सगचरिमोदए वट्टमाणस्स । लोभसंजलणस्स उक्कस्सओ उदओ कस्स ? खवगस्स गुणिदकम्मंसियस्स चरिमसमयसरागस्स ।

णिरयाउअस्स उक्कस्सओ उदओ कस्स ? सण्णिणा उक्कस्स✪जोगेण उक्कस्सियाए बंधगद्धाए उक्कस्सआबाधाए दससहस्साणि जेण आउअं णिबद्धं जहण्णियाए ट्ठिदीए कदणिसेगुक्कस्सपदं तस्स पढमसमयणेरइयस्स उक्कस्सओ उदओ। देवाउअस्स णिरयाउभंगो। मणुस्स-तिरिक्खाउआणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? उक्कस्सियाए बंधगद्धाए तप्पाओग्गेण उक्कस्सजोगेण च आउअं बंधिदूण कमेण कालं करिय तिपलिदोवमिएसु उववण्णो सव्वलहुं आउअं पभिण्णो सव्वजहण्णगं जीविदव्वं मोत्तूण सेसं ओवट्टिदं, जम्हि समए ओवट्टिज्जमाणमोवट्टिदं तत्थ उक्कस्सओ पदेसउदओ तिरिक्ख-मणुस्साउआणं ।

णिरयगइणामाए उक्कस्सपदेसउदओ कस्स ? जो संजदासंजदो सव्वुक्कस्सविसोहीए गुणसेडिणिज्जरं कुणमाणो संजमं पडिवज्जिय संजमगुणसेडिणिज्जरं कादुं पयट्टो✿

तीन संज्वलन कषायोंका उत्कृष्ट उदय किसके होता है ? अपने अपने उदयके साथ क्षपकश्रेणि चढकर अपने उदयके अन्तिम समयमें वर्तमान जीवके उनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है। संज्वलनलोभका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती सरागी क्षपक गुणितकर्मांशिकके होता है ।

नारकायुका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? उत्कृष्ट योग युक्त जिस संज्ञी जीवने उत्कृष्ट बन्धककालमें उत्कृष्ट आबाधाके साथ दस हजार वर्ष मात्र आयुको बांधकर जघन्य स्थितिके निषेकका उत्कृष्ट पद किया है ऐसे उस प्रथम समयवर्ती नारकीके उसका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है। देवायुकी प्ररूपणा नारकायुके समान है। मनुष्य व तिर्यंच आयुका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? जो उत्कृष्ट बन्धककालमें तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट योगके द्वारा आयुको बांधकर क्रमसे मृत्युको प्राप्त हो तीन पल्योपम प्रमाण आयुवाले जीवोंमें उत्पन्न हुआ है तथा जिसने सर्वलघु कालमें आयुको प्रभेद कर सर्वजघन्य जीवितव्य (अन्तर्मुहूर्त मात्र) को छोडकर शेषका अपवर्तन किया है उसके जिस समयमें अपवर्त्यमान आयु अपवर्तित हो चुकती है उस समयमें तिर्यंच आयु और मनुष्यायुका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है ।

नरकगति नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? सर्वोत्कृष्ट विशुद्धिके द्वारा गुणश्रेणिनिर्जराको करनेवाला जो संयतासंयत जीव संयमको प्राप्त होकर संयमगुणश्रेणिनिर्जराको

✪ अ-काप्रत्योः 'सण्णियासउक्कस्स-' इति पाठः । ❀ अद्धा-जोगुक्कोसो बंधित्ता भोगभूमिगेसु लहुं । सव्वप्पजीवियं वज्जइत्तु ओवट्टिया दोण्हं ॥ क. प्र. ५, १६ अद्ध त्ति-उत्कृष्टे बन्धकाले उत्कृष्टे च योगे वर्तमानो भोगभूमिगेसु तिर्यक्षु मनुष्येषु वा विषये कश्चित्तिर्यगायुः कश्चिन्मनुष्यायुः उत्कृष्टं त्रिपल्योपमस्थितिकं बध्वा लघु शीघ्रं च मृत्वा त्रिपल्योपमायुष्केष्वेकस्तिर्यक्ष्वपरो मनुष्येषु मध्ये समुत्पन्नः तत्र च सर्वाल्पजीवितमन्तर्मुहूर्त-प्रमाणं वर्जयित्वाऽन्तर्मुहूर्तमेकं धृत्वेत्यर्थः, शेषमशेषमपि (तौ द्वावपि) स्व-स्वायुरपवर्तनाकरणेनापवर्तयतः । ततोऽपवर्तनानन्तरं प्रथमसमये तयोस्तिर्यङ्-मनुष्ययोर्यथासंख्यं तिर्यङ्-मनुष्यायुषोरुत्कृष्टः प्रदेशोदयः । मलय.

✿ ताप्रतौ 'पविट्ठो' इति पाठः ।

तत्थ अंतोमुहुत्तमच्छिय मिच्छत्तं गंतूण णिरयाउअं बंधिय सम्मत्तं घेत्तुण पुणो दंसण-मोहणीयं खइय अंतोमुहुत्तस्सुवरि संजमासंजम-संजम-दंसणमोहणीयक्खवणगुणसेडीसु उदयमागच्छमाणासु णेरइएसु उववण्णो, तस्स णिरयगइणामाए उक्कस्सओ पदेस-उदओ। तिरिक्खगदिणामाए णिरयगदिभंगो। मणुसगदिणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? चरिमसमयभवसिद्धियस्स। देवगदिणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? उवसंतकसायस्स पढमगुणसेडिसीसयस्स से काले उदओ होहिदि त्ति मदस्स देवेसुप्प-ज्जिय पढमसमयदेवस्स उक्कस्सओ पदेसुदओ।

वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-बंधण-संघादाणं देवगइभंगो ✽। आहारस-रीर-आहारसरीरअंगोवंग-बंधण-संघादाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? पमत्तसंज-दस्स उट्ठाविदआहारसरीरस्स तप्पाओग्गविसुद्धस्स जाधे गुणसेडिसीसयं उदयं असंपत्तं ताधे तेसिं उक्कस्सओ पदेसउदओ✽, णत्थि अण्णा गुणसेडी।

ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-ओरालिय-तेजा-कम्म-इय-सरीरबंधण-संघाद--छसंठाण-पढमसंघडण--वण्ण-गंध-रस-फासअगुरुअलहुअ--

---

करनेके लिए प्रवृत्त हुआ है, वहां अन्तर्मुहूर्त रहकर मिथ्यात्वको प्राप्त हो नारकायुको बांधकर व सम्यक्त्वको ग्रहण कर पुनः दर्शनमोहका क्षय करके अन्तर्मुहूर्तके ऊपर संयमासंयम, संयम और दर्शनमोहक्षपक गुणश्रेणियोंसे उदयमें आनेपर नारकियोंमें उत्पन्न हुआ है उसके नरकगति-नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है। तिर्यग्गति नामकर्मके उत्कृष्ट प्रदेश उदयकी प्ररूपणा नरकगति नामकर्मके समान है। मनुष्यगति नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है? वह चरम समयवर्ती भव्यसिद्धिकके होता है। देवगतिनामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है? अन्यतर कालमें जिसके प्रथम गुणश्रेणिशीर्षकका उदय होगा, इस स्थितिमें वर्तमान जो उपशान्तकषाय मरणको प्राप्त होकर देवोंमें उत्पन्न हुआ है उस प्रथम समयवर्ती देवके देवगति नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है।

वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग एवं उसके बन्धन और संघातकी प्ररूपणा देवगतिके समान है। आहारकशरीर, आहारकशरीरांगोपांग एवं उसके बन्धन व संघातका उत्कृष्ट प्रदेशउदय किसके होता है? जिसने आहारकशरीरको उत्पादित किया है तथा जो तत्प्रायोग्य विशुद्धिसे संयुक्त है ऐसे प्रमत्तसंयत जीवके जब गुणश्रेणिशीर्षक उदयको प्राप्त नहीं होता तब उसके उनका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है, अन्य गुणश्रेणि नहीं होती।

औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, औदारिक, तैजस व कार्मणशरीर-बन्धन एवं संघात, छहसंस्थान, प्रथम संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात,

---

✽ उवसंतपढमगुणसेढीए निद्दादुगस्स तस्सेव। पावइ सीसगमुदयं ति जाय देवस्स सुरनवगे ।। क. प्र. ५, १२. ××× तथा तस्यैवोपशान्तकषायस्यात्मीयप्रथमगुणश्रेणीशीर्षकोदयमनन्तरसमये प्राप्स्यतीति तस्मिन् पाश्चात्ये समये जाते देवस्य, ततः प्रथमगुणश्रेणीशिरसि वर्तमानस्य सुरनवकस्य वैक्रियिकसप्तक-देवद्विकरूप-स्योत्कृष्टः प्रदेशोदयः। मलय. ✽ आहारग-उज्जोयाणुत्तरतणु अप्पमत्तस्स ।। क. प्र. ५, १८.

उवघाद-परघाद-पसत्थापसत्थविहायगइ-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह--णिमिणणामाणमुक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? चरिमसमयसजोगिस्स। पंचण्णं संघडणाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? संजमासंजम-संजम-अणंताणुबंधिविसंजोयणगुणसेडीओ तिण्णि वि एगट्ठं कादूण ट्ठियसंजदस्स जाधे गुणसेडिसीसयाणि तिण्णि वि उदयमागदाणि ताधे पंचण्णं संघडणाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ। णिरयाणुपुव्वीए णिरयभंगो। तिरिक्खाणुपुव्वीए तिरिक्खगइभंगो। देवाणुपुव्वीए देवगइभंगो। मणुसाणुपुव्वीए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? संजमासंजम-संजम-दंसणमोहणीयक्खवणगुणसेडीओ तिण्णि वि एगट्ठं कादूण मणुस्सेसु विग्गहं कादूणुववण्णस्स।

उज्जोवणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? जो संजदो उत्तरसरीरं विउव्विदो अप्पमत्तभावं गदो तस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ। आदावणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? जो गुणिदकम्मंसिओ मदो बीइंदिएसु बीइंदियसमगं ठिदिसंतकम्मं कादूण एइंदियत्तं गदो, तत्थ वि सव्वलहुअं एइंदियसमगं ठिदिसंतकम्मं कादूण बादरपुढवीजीवेसु उववण्णो तस्स पढमसमयपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ पदेसउदओ✪। उस्सासस्स

प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ और निर्माण; इन नामकर्मोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है? वह चरम समयवर्ती सयोगीके होता है। शेष पांच संहननोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है? संयमासंयम, संयम और अनन्तानुबन्धिविसंयोजन रूप तीनों ही गुणश्रेणियोंको एकत्र करके स्थित संयतके जब तीनों ही गुणश्रेणिशीर्षक उदयको प्राप्त होते हैं तब उन पांच संहननोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है। नारकानुपूर्वीकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है। तिर्यगानुपूर्वीकी प्ररूपणा तिर्यग्गतिके समान है। देवानुपूर्वीकी प्ररूपणा देवगतिके समान है। मनुष्यानुपूर्वीका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है? संयमासंयम, संयम और दर्शनमोहनीयक्षपण स्वरूप तीनों ही गुणश्रेणियोंको एकत्र करके मनुष्योंमें विग्रह करके उत्पन्न हुए जीवके उसका उत्कृष्ट प्रदेशउदय होता है।

उद्योत नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है? जो संयत जीव उत्तर उरीरकी विक्रिया करके अप्रमत्त अवस्थाको प्राप्त हुआ है उसके उसका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है। आतप नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेशउदय किसके होता है? जो गुणितकर्मांशिक मरणको प्राप्त होकर द्वीन्द्रियोंमें द्वीन्द्रियके समान स्थितिसत्त्वको करके बादर पृथिवीकायिक जीवोंमें उत्पन्न हुआ है, उस प्रथम समयवर्ती पर्याप्तकके उसका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है। उच्छ्वासका

✪ बेइंदिय थावरगो कम्मं काऊण तस्समं खिप्पं। आयावस्स उ तव्वेइ पढमसमयम्मि वट्टंतो॥ क. प्र. ५, १९. गुणितकर्मांशः पंचेन्द्रियः सम्यग्दृष्टिर्जातः, ततः सम्यक्त्वनिमित्तां गुणश्रेणिं कृतवान्। ततस्तस्या गुणश्रेणीतः प्रतिपतितो मिथ्यात्वं गतः। गत्वा च द्वीन्द्रियमध्ये समुत्पन्नः। तत्र च द्वीन्द्रियप्रायोग्यां स्थितिं मुक्त्वा शेषां सर्वामप्यवर्तयति। ततस्ततोऽपि मृत्वा एकेन्द्रियो जातः। तत्रैकेन्द्रियसमां स्थितिं करोति। शीघ्रमेव च शरीरपर्याप्त्या पर्याप्तः, तस्य तद्वेदिन आतपवेदिन खरबादरपृथ्वीकायिकस्य शरीरपर्याप्त्यनन्तरं प्रथमसमये

उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? चरिमसमयउस्सासणिरोहकारयस्स । सुस्सर-दुस्सराणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? चरिमसमयवचिजोगणिरोहकारयस्स ।

पंचिंदियजादि--तस--बादर--पज्जत्त--जसकित्ति–सुभग–आदेज्ज–उच्चागोदाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? चरिमसमयभवसिद्धियस्स । सव्व*कम्माणं पि☼ जम्हि जम्हि गुणिदकम्मंसिओ त्ति ण भणिदं तम्हि तम्हि गुणिदकम्मंसिओ त्ति वत्तव्वं । चदुजादि-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीराणमुक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? संजमासंजमसंजमगुणसेडीओ एगट्ठं कादूण अप्पिदेसुप्पण्णस्स । अजसकित्ति–दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणमुक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स ? संजमासंजम-संजम–दंसणमोहणीयक्खवगगुणसेडिसीसयाणि☉ तिण्णि वि एगट्ठ कादूण ट्ठियस्स जाधे गुणसेडिसीसयाणि उदयमागदाणि ताधे उक्कस्सओ पदेसउदओ ।

पंचण्णमंतराइयाणं उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? चरिमसमयछदुमत्थस्स । तित्थयरणामाए उक्कस्सओ पदेसउदओ कस्स? गुणिदकम्मंसियस्स चरिमसमयभव–सिद्धियस्स । एवमुक्कस्सं सामित्तं समत्तं ।

एत्तो जहण्णसामित्तं । तं जहा- मदिआवरणस्स जहण्णओ पदेसउदओ कस्स? जो

उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती उच्छवासनिरोधकके होता है । सुस्वर और दुस्वरका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती वचन–योगनिरोधकके होता है ।

पंचेन्द्रिय जाति, त्रस, बादर, पर्याप्त, यशकीर्ति, सुभग, आदेय और उच्चगोत्र; इनका उत्कृष्ट प्रदेशउदय किसके होता है? वह अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिकके होता है । सभी कर्मोके जहां जहां ' गुणितकर्मांशिक ' नहीं कहा है वहां वहां 'गुणितकर्मांशिक' कहना चाहिये । चार जाति नामकर्म, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीरका उत्कृष्ट प्रदेशउदय किसके होता है ? संयमासंयम और संयम गुणश्रेणियोंको एकत्र करके विवक्षित जीवोंमें उत्पन्न हुए जीवके उनका उत्कृष्ट प्रदेशउदय होता है । अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? संयमासंयम, संयम और दर्शनमोहनीयक्षपक; इन तीनों ही गुणश्रेणिशीर्षकोंको एकत्र करके स्थित जीवके जब गुणश्रेणिशीर्षक उदयको प्राप्त होते हैं तब उक्त प्रकृतियोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय होता है ।

पांच अन्तराय कर्मोंका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थके होता है । तीर्थंकर नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेश उदय किसके होता है ? वह गुणित–कर्मांशिक अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिकके होता है । इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ।

यहां जघन्य स्वामित्वका कथन करते हैं । यथा- मतिज्ञानावरणका जघन्य प्रदेश उदय

आतपनाम्नः उत्कृष्टः प्रदेशोदयः। एकेन्द्रियो द्वीन्द्रियस्थितिं झटित्येव स्वयोग्यां करोति, न त्रीन्द्रियादिस्थिति–मिति द्वीन्द्रियग्रहणम् । मलय. * अ-काप्रत्योः 'भवसिद्धियसव्व' इति पाठः । ☼ ताप्रतौ नोपल–भ्यते पदमिदम् । ☉ ताप्रतौ '-संजमगुणसेडीओ-दंसणमोहणीयक्खवगसीसयाणि' इति पाठः ।

सुहुमणिगोदजीवेसु कम्मट्ठिदिमच्छिदाउओ सव्वेहि आवासएहि अभवसिद्धियपाओग्ग-जहण्णयं काऊण तदो संजमासंजमं संजमं च बहुसो लध्दूण चत्तारिवारे कसाए उवसामेदूण एइंदिएसु सुहुमेसु गदो, तत्थ य असंखेज्जाणि वस्ससहस्साणि अच्छिदूण मणुस्सेसु आगदो पुव्वकोडि✽ संजममणुपालेदूण अंतोमुहुत्तावसेसे मिच्छत्तं गदो दसवाससहस्सिएसु देवेसु उववण्णो पुणो तत्थ सम्मत्तं घेत्तूण आउअमणुपालिय अंतोमुहुत्तावसेसे मिच्छत्तं गदो वियट्टिदाओ ट्ठिदीओ उक्कस्ससंकिलिट्ठो एइंदिएसु गदो तस्स पढमसमयस्स मदिआवरणस्स जहण्णगो पदेसउदओ। सुद-मणपज्जव-केवलणाणावरण-चक्खु-अचक्खु-केवलदंसणावरणाणं मदिणाणावरणभंगो। ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? जो मदिआवरणस्स अपच्छिमे▣ संजमभवग्गहणे वट्टमाणगो सो चेव अपरिवट्टिदेण सम्मत्तेण वेमाणिएसु उववण्णो मिच्छत्तं गदो अंतोकोडाकोडीदो तीसंसागरोवमकोडाकोडीओ पबद्धाओ जाधे उक्क० ट्ठिदी आवलियपबद्धा ताधे ओहिणाण--ओहिदंसणावरणाणं जहण्णओ पदेसउदओ✿। णिद्दा-पयलाणं जहण्णओ पदेस---

---

किसके होता है ? जो सूक्ष्म निगोद जीवोंमें कर्मस्थिति मात्र सूक्ष्म निगोदकी आयुके साथ रहकर सब आवासों द्वारा अभव्यसिद्धिक प्रायोग्य जघन्य करके, तत्पश्चात् संयमासंयम और संयमको बहुत वार प्राप्त करके, चार वार कषायोंको उपशमा कर सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें गया है और वहां असंख्यात हजार वर्ष रहकर मनुष्योंमें आया है, यहां पूर्वकोटि काल तक संयमको पालकर अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर मिथ्यात्वको प्राप्त होकर दस हजार वर्ष मात्र आयुवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ है, पुनः वहां सम्यक्त्वको ग्रहणकर आयुको पालकर उसके अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर मिथ्यात्व-को प्राप्त होकर स्थितियोंका विकर्षण करता हुआ उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हो एकेन्द्रियोंमें पहुंचा है उसके प्रथम समयमें मतिज्ञानावरणका जघन्य प्रदेश उदय होता है। श्रुतज्ञानावरण, मनः-पर्ययज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्श-नावरणका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जो मतिज्ञानावरणके अन्तिम संयमभवग्रहणमें वर्तमान है वही अपरिवर्तित सम्यक्त्वके साथ वैमानिक देवोंमें उत्पन्न होकर मिथ्यात्वको प्राप्त हो अन्तःकोडाकोडिसे तीस कोडाकोडि सागरोपमोंको बांधता है जब उत्कृष्ट स्थिति आवली समयप्रबद्ध मात्र होती है तब उसके अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणका जघन्य प्रदेश उदय होता है । निद्रा और प्रचलाका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जो जीव

✽ अ-काप्रत्योः 'पुव्वकोडी' इति पाठः। ♠ पगयं तु खवियकम्मे जहन्नसामी जहन्नदेवठिइ। भिन्नमुहुत्ते सेसे मिच्छत्तगती अतिकिलिट्ठो ।। कालगएगिंदियगो पढमे समये व मइ-सुयावरणे। केवलदुग-मणपज्जव-चक्खु-अचक्खूण आवरणा।। क. प्र. ५, २०-२१. ▣ का-ताप्रत्योः 'अपच्छिम' इति पाठः।

✿ ओहीणसंजमाओ देवत्तगए गयस्स मिच्छत्तं। उक्कोसट्ठिइबंधे विकड्डुणा आलिगं गंतुं ।। क. प्र. ५, २२. ओहीण त्ति- क्षपितकर्मांशः संयमं प्रतिपन्नः समुत्पन्नावधि-ज्ञानदर्शनोऽप्रतिपतितावधिज्ञानदर्शन एव देवो जातः, तत्र चान्तर्मुहूर्तं गते मिथ्यात्वं प्रतिपन्नः। ततो मिथ्यात्वप्रत्ययेनोत्कृष्टां स्थितिं बद्धुमारभते,

उदओ कस्स? जो ओहिणाणावरणस्स जहण्णपदेसवेदओ तस्स चेव जाधे उक्कस्सट्ठिदिबंधगद्धा पुण्णा ताधे जो उक्कस्सट्ठिदिबंधादो पडिभग्गो संतो णिद्दं पयलं✿ वा पवेदयदि तस्स णिद्दा-पयलाणं जहण्णओ पदेसउदओ▣। णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं जहण्णओ पदेसुदओ कस्स ? जो मदिआवरणस्स जहण्णओ पदेसउदओ दिट्ठो सो चेव जाधे पज्जत्तिं गदो (ताधे) तस्स एइंदियपज्जत्तीए पढमसमयपज्जत्तयस्स थीणगिद्धितियं वेदयमाणस्स जहण्णओ पदेसउदओ♠। सादासादाणं ओहिणाणावरणभंगो।

मिच्छत्तस्स जहण्णगो पदेसउदओ कस्स ? उदीरणउदयादो❋ उवरि आवलियं गदस्स। सम्मामिच्छत्तस्स सम्मत्तस्स य मिच्छत्तभंगो✡। अणंताणुबंधीणं जहण्णगो पदेसउदओ कस्स ? अभवसिद्धियपाओग्गजहण्णसंतकम्मं कादूण सम्मत्तं संजमासंजमं संजमं च बहुसो लद्धूण चत्तारिवारे कसाए उवसामेदूण पुणो विसंजोइदं संजुत्तं कादूण बेछावट्ठीओ सम्मत्तमणुपालिय मिच्छत्तं गदो, तस्स आवलियमिच्छाइट्ठिस्स अणंताणु-

---

अवधिज्ञानावरणके जघन्य प्रदेशका वेदक है उसीका जब स्थितिबन्धककाल पूर्ण होता है तब जो उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे प्रतिभग्न होकर निद्रा अथवा प्रचलाका वेदन करता है उसके निद्रा और प्रचलाका जघन्य प्रदेश उदय होता है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जिसके मतिज्ञानावरणका जघन्य प्रदेश उदय कहा गया है वही जब पर्याप्तिको प्राप्त होता है (तब) एकेन्द्रिय पर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयमें उसके स्त्यानगृद्धित्रिकका वेदन करते हुए उनका जघन्य प्रदेश उदय होता है। साता और असाता वेदनीयकी प्ररूपणा अवधिज्ञानावरणके समान है।

मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? उदीरणाउदयसे ऊपर आवलीको प्राप्त हुए जीवके मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेश उदय होता है। सम्यग्मिथ्यात्व और सम्यक्त्वके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है। अनन्तानुबन्धी कषायोंका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? अभव्यसिद्धिकके योग्य जघन्य सत्कर्मको करके; सम्यक्त्व, संयमासंयम और संयमको बहुत बार प्राप्त करके; चार बार कषायोंको उपशमाकर, फिरसे भी विसंयोजित संयुक्त करके (अनन्तानुबन्धी कषायोंको बांधकर) दो छयासठ सागरोपम तक सम्यक्त्वको पालकर जो मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है उस आवली कालवर्ती मिथ्यादृष्टिके अनंतानुबंधी कषायों-

---

प्रभूतं च दलिकं विकर्षयति उद्वर्तयतीत्यर्थः। तत आवलिकां गत्वाऽतिक्रम्य बन्धावलिकायामतीतायामित्यर्थः' अवध्योरवधिज्ञानावरणावधिदर्शनावरणायोजघन्यः प्रदेशोदयः। मलय. ✿ ताप्रतौ 'णिद्दा-पयले' इति पाठः। ▣ निद्रा-प्रचलयोरपि तथैव। केवलमुत्कृष्टस्थितिबन्धात् प्रतिभग्नस्य प्रतिपतितस्य निद्रा प्रचलयोरनुभवितुं लग्नस्य चेति द्रष्टव्यम्। उत्कृष्टस्थितिबन्धो हि अतिशयेन संक्लिष्टस्य भवति, न चातिसंक्लेशे वर्तमानस्य निद्रोदयसम्भवः। तत उक्तं उत्कृष्टस्थिबन्धान्प्रतिभग्नस्येति। क. प्र. ५, २३. (मलय.).

♠ निद्रानिद्रादयोऽपि तिस्रः प्रकृतयो जघन्यप्रदेशोदयविषये मतिज्ञानावरणवद्भावनीयाः। नवरमिन्द्रियपर्याप्त्या पर्याप्तस्य प्रथमसमये इति द्रष्टव्यम्, ततोऽनन्तरसमये उदीरणाया सम्भवेन जघन्यप्रदेशोदयसम्भवात्, क. प्र. ५, २४. (मलय.). ❋ ताप्रतौ 'उदीरणाउदयादो' इति पाठः। ✡ दंसणमोहे तिविहे उदीरणुदये आलिगं गंतुं। क. प्र. ५, २५.

बंधीणं जहण्णओ पदेसउदओ❋। अट्ठण्णं कसायाणं चदुण्णं संजलणाणं पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? जो उवसंतकसाओ मदो देवो जादो तस्स आवलियतब्भवत्थस्स जहण्णओ पदेसउदओ▣। अरदि-सोगाणं जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? एदासिं पयडीणं जहा ओहिणाणावरणस्स परूवणा कदा तहा कायव्वा। इत्थिवेदस्स जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? जाव अपच्छिमसंजमभवग्गहणे त्ति ताव जहा मदिआवरणस्स परूविदं तहा परूवेयव्वं। तदो अपच्छिमे संजमभव-ग्गहणे देसूणपुव्वकोडिं संजममणुपालेदूण सव्वजहण्णए जीविदसेसे मिच्छत्तं गदो, तदो देवीसु उववण्णो, उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तं गंतूण अंतोकोडाकोडिबंधादो पण्णारससागरोवमकोडाकोडीओ पबद्धाओ, तदो ताए देवीए जाधे पण्णारससागरो-वमकोडाकोडिट्ठिदी पबद्धा तदो✲ बंधावलियचरिमसमए इत्थिवेदस्स जहण्णओ पदेसउदओ✿। णवुंसयवेदस्स मदिआवरणभंगो।

का जघन्य प्रदेश उदय होता है। आठ कषाय, चार संज्वलन, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय और जुगुप्साका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जो उपशान्तकषाय मर करके देव हुआ है उस आवली कालवर्ती तद्भवस्थके उनका जघन्य प्रदेश उदय होता है। अरति और शोकका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? इन प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा जैसे अव-धिज्ञानावरणके सम्बन्धमें की गयी है वैसे करना चाहिये। स्त्रीवेदका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? अन्तिम संयमभवग्रहण तक जैसे मतिज्ञानावरणके सम्बन्धमें प्ररूपणा की गयी है वैसे यहां प्ररूपणा करना चाहिये। तत्पश्चात् अपश्चिम संयमभवग्रहणमें कुछ कम पूर्वकोटि काल तक संयमको पालकर जीवितके सबसे जघन्य शेष रहनेपर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ, पश्चात् देवियोंमें उत्पन्न हुआ, वहां उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त जाकर अंत:कोडाकोडि मात्र बन्धकी अपेक्षा पंद्रह कोडाकोडि सागरोपम प्रमाण बन्ध किया, पश्चात् उक्त देवीके द्वारा जब पंद्रह कोडाकोडि सागरोपम मात्र स्थिति बांधी जाती है तब बंधावलीके अंतिम समयमें स्त्रीवेदका जघन्य प्रदेश उदय होता है। नपुंसकवेदकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है।

❋ चउरुवसमित्तु पच्छा संजोइय दीहकालसम्मत्ता। मिच्छत्तगए आवलिगाए संजोयणाणं तु ॥ क. प्र. ५, २६. ▣ सत्तरसण्ह वि एवं उवसमइत्ता गए देवं ॥ क. प्र. ५, २५. तथाऽनन्तानुबन्धिवर्जद्वादशकषाय-पुरुषवेद-हास्य-रति-भय-जुगुप्सारूपाः सप्तदश प्रकृतीरुपशमय्य देवलोकं गतस्य एवमेवेति उदीरणोदयचरमसमये तासां सप्तदशप्रकृतीना जघन्यः प्रदेशोदयः। मलय. ✲ ताप्रतौ '-कोडाकोडीओ पबद्धाओ ट्ठिदीओ तदो' इति पाठः। ✿ इत्थीए संजमभवे सव्वणिरुद्धम्मि गंतु मिच्छत्तं। देवीए लहुमिच्छी जेट्ठठिइ आलिगं गंतुं ॥ क. प्र. ५, २७. ×××× इयमत्र भावना- क्षपितकर्मांशा काचित् स्त्री देशोनां पूर्वकोटिं यावत्संयम-मनुपाल्यान्तर्मुहूर्ते आयुषोऽवशेषे मिथ्यात्वं गत्वा अनन्तरभवे देवी समुत्पन्ना, शीघ्रमेव च पर्याप्ता॥ तत उत्कृष्टे संक्लेशे वर्तमाना स्त्रीवेदस्योत्कृष्टां स्थितिं बध्नाति, पूर्वबद्धां चोद्वर्तयति। तत उत्कृष्टबन्धारम्भात् परत आवलिकायाश्चरमसमये तस्याः स्त्रीवेदस्य जघन्यः प्रदेशोदयो भवति। मलय.

णिरयाउअस्स जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? जेण तप्पाओग्गजहण्णेहि जोगट्ठाणेहि तप्पाओग्गजहण्णियाए बंधगद्धाए आउअं पबद्धं, हेट्ठिल्लीणं ट्ठिदीणं णिसेयस्स उक्कस्सपदं कदं, एवं बंधिदूण मदो❋ तेत्तीससागरोवमिएसु उववण्णो सव्वमहंत✡-असादोदए वट्टमाणस्स तस्स चरिमसमयणेरइयस्स✿ जहण्णपदेसउदओ। मणुस्साउअस्स जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? जेण तप्पाओग्गजहण्णजोगट्ठाणेहि तप्पाओग्गजहण्णबंधगद्धाए मणुस्साउअं पबद्धं हेट्ठिल्लीणं ट्ठिदीणं णिसेयस्स उक्कस्सपदं कदं, एवं बंधिदूण मदो तिपलिदोवमाउट्ठिदिओ मणुस्सो जादो, असादोदया सव्वबहुआ सव्वचिरं⚲ सादोदया वि मंदाणुभागा, तस्स तिपलिदोवमियस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स जहण्णओ पदेसउदओ। तिरिक्खाउअस्स मणुसाउअभंगो। देवाउअस्स वि मणुसाउअभंगो। णवरि देवेसु तेत्तीसंसागरोवमिएसु उववण्णस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स वत्तव्वं♣।

णिरयगइणामाए जाव दसवस्ससहस्सिएसु उववण्णो त्ति ताव मदिआवरणभंगो। तदो दसवस्ससहस्सिएसु उववण्णेण पुणो सम्मत्तं लद्धं, अणंताणुबंधिचउक्कं विसंजोइदं, अंतोमुहुत्तावसेसे मिच्छत्तं गदो विकट्टिदाओ▣ ट्ठिदीओ मदो एइंदिएसु उववण्णो, तत्तो

नारकायुका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जिसने तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थानोंके द्वारा तत्प्रायोग्य जघन्य बन्धककालमें नारक आयुका बन्ध किया है तथा अधस्तन स्थितियोंके निषेकका उत्कृष्ट पद किया है, इस प्रकार बांधकर मरणको प्राप्त हो जो तेतीस सागरोपम आयुवाले नारकियोंमें उत्पन्न होता हुआ सबसे महान् असाता वेदनीयके उदयमें वर्तमान है ऐसे नारकीके अन्तिम समयमें नारकायुका जघन्य प्रदेश उदय होता है। मनुष्यायुका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जिसने तत्प्रायोग्य जघन्य योगस्थानोंके द्वारा तत्प्रायोग्य जघन्य बन्धककालमें मनुष्यायुका बन्ध किया है तथा अधस्तन स्थितियोंके निषेकका उत्कृष्ट पद किया है, इस प्रकार बांधकर जो मरणको प्राप्त हो तीन पल्योपम प्रमाण आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ है, जिसके असातोदय सबमें बहुत व सर्वचिर काल रहनेवाले तथा सातोदय भी मन्द अनुभागवाले हैं; उस तीन पल्योपम प्रमाण आयुवाले मनुष्यके तद्भवस्थ रहनेके अन्तिम समयमें मनुष्यायुका जघन्य प्रदेश उदय होता है। तिर्यगायुके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा मनुष्यायुके समान है। देवायुकी भी प्ररूपणा मनुष्यायुके समान है। विशेष इतना है कि तेतीस सागरोपम आयुवाले देवोंमें उत्पन्न हुए उसके तद्भवस्थ रहनेके अन्तिम समयमें कहना चाहिये।

नरकगति नामकर्मके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा 'दस हजार वर्ष प्रमाण आयुवालोंमें उत्पन्न होने' तक मतिज्ञानावरणके समान है। तत्पश्चात् दस हजार वर्ष प्रमाण आयुवालोंमें उत्पन्न होकर फिरसे सम्यक्त्वको प्राप्त हो जिसने अनन्तानुबन्धिचतुष्कका विसंयोजन किया है, अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर जो मिथ्यात्वको प्राप्त हो स्थितियोंको विकर्षित करके मरकर

❋ ताप्रतौ 'तदो' इति पाठः। ✡ ताप्रतौ 'महत्त' इति पाठः। ✿ अ-ताप्रत्योः 'चारिसमए णेरइयस्स' इति पाठः। ⚲ ताप्रतौ 'सव्वचिरं•' इति पाठः। ♣ अप्पद्धा-जोगचियाणाऊणुक्कस्सगठिईणंते। उवरिं थोवनिसेगे चिरतिव्वासायवेईणं ॥ क. प्र. ५, २८. ▣ ताप्रतौ 'विओकड्डिदाओ' इति पाठः।

मदो असण्णीसु उववण्णो, तत्तो अंतोमुहुत्तेण णेरइओ जादो, तस्स सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदस्स णिरयगइणामाए जहण्णओ पदेसउदओ*। तिरिक्खगइणामाए मदिआवरणभंगो। णवरि इगितीसवेदएसु उववज्जावेदव्वो। मणुसगइणामाए जाव एइंदिएसु उववण्णो त्ति ताव मदिआवरणभंगो। तदो एइंदियभवग्गहणादो मणुस्सो जादो, सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो, तस्स मणुसगइणामाए जहण्णओ पदेसउदओ। देवगदिणामाए ओहिणाणावरणभंगो। णवरि जाधे ट्ठिदीओ विकट्टिदाओ ताधे उत्तरसरीरं विउव्विदो, उज्जोवणामाए वेदओ, तस्स देवगदिणामाए जहण्णओ पदेसुदओ♠।

वेउव्वियसरीरस्स✿ मदिआवरणभंगो। णवरि सो एइंदिओ सण्णितिरिक्खो होदूण उज्जोवुदएण उत्तरं विउव्विदो, जाधे ट्ठिदीओ विकट्टिदाओ ताधे जहण्णपदेसुदओ। ओरालियसरीरणामाए जाव एइंदिएसु उववण्णो त्ति ताव मदिआवरणभंगो। पुणो एइंदिएहिंतो तसेसु उववज्जावेयव्वो जेसु उववण्णो तीसण्णं पयडीणं वेदओ होदि। तदो जाधे तीसं वेदयदि ताधे ओरालियसरीरस्स जहण्णओ पदेसुदओ। चदुजादि-तेजा-कम्मइय-

---

एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ है, उनमेंसे मरकर असंज्ञियोंमें उत्पन्न हुआ है, पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें नारकी हुआ है, उसके सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त होनेपर नरकगति नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय होता है। तिर्यग्गति नामकर्मकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। विशेष इतना है कि इकतीस सागरोपम प्रमाण आयुका वेदन करनेवाले देवोंमें उत्पन्न कराना चाहिये। मनुष्यगति नामकर्मकी प्ररूपणा 'एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ' तक मतिज्ञानावरणके समान है। पश्चात् एकेन्द्रिय भवग्रहणसे मनुष्य उत्पन्न हुआ, सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ, उसके मनुष्यगति नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय होता है। देवगति नामकर्मकी प्ररूपणा अवधिज्ञानावरणके समान है। विशेष इतना है कि जब स्थितियां विकर्षित की जाती हैं तब उत्तर शरीरकी विक्रियाको प्राप्त होता हुआ उद्योत नामकर्मका वेदक होता है, तब उसके देवगति नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय होता है।

वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। विशेष इतना है कि वह एकेन्द्रिय जीव संज्ञी तिर्यंच होकर उद्योतके उदयके साथ उत्तर शरीरकी विक्रिया करता है, वह जब स्थितियोंको विकर्षित करता है तब उसके उनका जघन्य प्रदेश उदय होता है। औदारिक शरीर नामकर्मके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा 'एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ' पर्यन्त मति–ज्ञानावरणके समान है। पश्चात् एकेन्द्रियोंमेंसे त्रसोंमें उत्पन्न कराना चाहिये, जिनमें उत्पन्न होकर तीस प्रकृतियोंका वेदक होता है। पश्चात् जब वह तीसका वेदन करता है तब उसके औदारिकशरीरका जघन्य प्रदेश उदय होता है। चार जातियां, तैजस व कार्मण शरीर, तैजस

---

* संजोयणा विजोजिय देवभवजहन्नगे अइनिद्धे। बंधिय उक्कस्सठिई गंतूणेगिंदिया सन्नी ।। सव्वलहुं नरयगए निरयगई तम्मि सव्वपज्जत्ते। क. प्र. ५, २९–३०. ♠ देवगई ओहिसमा नवरिं उज्जोववेयगो ताहे ।। क. प्र. ५, ३१. ✿ अ-काप्रत्योः 'वेउव्वियसत्तयस्स' इति पाठः।

-सरीर-तेजा-कम्मइयसरीरबंधण-संघाद-छसंठाण-छसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरु-अलहुअ-उवघाद-परघाद-उज्जोव-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जस-कित्ति-अजसकित्ति-णिमिणणामाणं ओरालियसरीरभंगो । आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंग-बंधण-संघादणामाणं जहण्णउदओ कस्स ? अभवसिद्धियपाओग्गजहण्णयं कादूण चत्तारिवारे कसाए उवसामेदूण अपच्छिमे भवग्गहणे देसूणपुव्वकोडिं संजममणुपालेऊण आहारएण उत्तरसरीरं विउव्विदो सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो, तस्स जहण्णओ पदेसउदओ ।

चदुण्णमाणुपुव्वीणं जहण्णओ पदेसउदओ कस्स ? पढमसमयतब्भवत्थस्स । आदावणामाए जहण्णओ उदओ कस्स ? मदिआवरणस्स खविदकम्मंसियविहाणेण आगंतूण जो आदावणामाए वेदएसु उववण्णो आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदो तस्स पढमसमयपज्जत्तयदस्स जहण्णगो पदेसउदओ । एइंदिय-थावर-अपज्जत्त-णीचागोदाणं मदिआवरणभंगो । णवरि एइंदिय-थावराणं सव्वपज्जत्तयदो ।

सुहुमणामाए जहण्णगो पदेसउदओ कस्स? जो मदिआवरणस्स जहण्णपदेसवेदओ सो तम्हि भवे खुद्दाभवग्गहणं जीविदूण सुहुमेइंदिएसु पज्जत्तएसु उववण्णो आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदो, तस्स पढमसमए सुहुमणामाए जहण्णगो पदेसउदओ । साहारणणामाए

व कार्मण शरीरों सम्बन्धी बन्धन व संघात, छह संस्थान, छह संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उद्योत, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और निर्माण; इन नामकर्मोंके जघन्य प्रदेश उदयकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान है । आहारकशरीर, आहारकशरीरांगोपांग, आहारकशरीरबन्धन व संघातका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? अभव्यसिद्धिक प्रायोग्य जघन्य [सत्कर्म] को करके, चार वार कषायोंको उपशमा कर अन्तिम भवग्रहणमें कुछ कम पूर्वकोटि काल तक संयमका पालन कर आहारकशरीररूपमें उत्तर शरीरकी विक्रिया करके जो सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ है उसके उनका जघन्य प्रदेश उदय होता है ।

चार आनुपूर्वी नामकर्मोंका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? वह प्रथम समयवर्ती तद्-भवस्थके होता है । आतप नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? मतिज्ञानावरण संबंधी क्षपितकर्मांशिकके विधानसे आकर जो आतप नामकर्मके वेदकोंमें उत्पन्न होकर आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ है उस प्रथम समयवर्ती पर्याप्तके उसका जघन्य प्रदेश उदय होता है । एकेन्द्रिय, स्थावर, अपर्याप्त और नीचगोत्रकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । विशेष इतना है कि एकेन्द्रिय और स्थावरका जघन्य प्रदेश उदय सर्व पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुए जीवके होता है ।

सूक्ष्म नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जो मतिज्ञानावरणके जघन्य प्रदेशका वेदक उस भवमें क्षुद्रभवग्रहण काल जीवित रहकर सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें उत्पन्न हो आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुआ है उसके प्रथम समयमें सूक्ष्म नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय होता है ।

जहण्णगो पदेसउदओ कस्स ? जो मदिआवरणस्स जहण्णपदेसवेदओ खुद्दाभवग्गहणं जीविऊण मदो साहारणकाइएसु उज्जोवणामाए वेदएसु उववण्णो आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदो तस्स पज्जत्तयदस्स पढमसमए साहारणसरीरणामाए जहण्णओ पदेस-उदओ। तित्थयरणामाए जहण्णगो पदेसउदओ कस्स ? तप्पाओग्गेण जहण्णएण जोगेण बंधिय सव्वुक्कस्सियाहि गुणसेडिणिज्जराहि गालिय केवलणाणमुप्पाइय सजोगिपढमसमए वट्टमाणस्स जहण्णगो पदेसउदओ । उच्चागोद-पंचंतराइयाणं ओहिणाणावरणभंगो । एवं सामित्तं समत्तं ।

एत्तो एयजीवेण कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णि-यासो चेदि अणुयोगद्दाराणि सामित्तादो साहेदूण भाणियव्वाणि ।

एत्तो अप्पाबहुअं । ओघुक्कस्सपदेसुदयदंडओ- मिच्छत्तस्स पदेसुदओ थोवो । सम्मामिच्छत्तस्स विसेसाहिओ। पयलापयलाए संखेज्जगुणो। णिद्दाणिद्दाए विसेसाहिओ। थीणगिद्धीए विसेसा० । अणंताणुबंधीसु अण्णदरस्स० विसे० । अपच्चक्खाण० असंखे० गुणो । पच्चक्खाणावरणिज्ज० विसे०। पयलाए असंखे० गुणो । णिद्दाए विसे०। सम्मत्ते असंखे० गुणो । केवलणाणावरणे संखे० गुणो । केवलदंसणावरणे विसे०। देवाउअस्स अणंतगुणो । णिरयाउअस्स विसे० । मणुस्साउअस्स संखे० गुणो । तिरिक्खाउअस्स

साधारण नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है ? जो मतिज्ञानावरणके जघन्य प्रदेशका वेदक क्षुद्रभवग्रहण काल जीवित रहकर मृत्युको प्राप्त होता हुआ उद्योत नामकर्मके वेदक साधारणकायिकोंमें उत्पन्न होकर आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्तक हुआ है उसके पर्याप्तक होनेके प्रथम समयमें साधारणशरीर नामकर्मका जघन्य प्रदेश उदय होता है। तीर्थंकर नाम-कर्मका जघन्य प्रदेश उदय किसके होता है? तत्प्रायोग्य जघन्य योगसे उसे बांधकर व सर्वोत्कृष्ट गुणश्रेणिनिर्जराओंके द्वारा गलाकर केवलज्ञानको उत्पन्न कर सयोगकेवलीके प्रथम समयमें वर्तमान जीवके तीर्थंकर प्रकृतिका जघन्य प्रदेश उदय होता है । उच्चगोत्र और पांच अन्तराय कर्मोंकी प्ररूपणा अवधिज्ञानावरणके समान है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

यहां एक जीवकी अपेक्षा काल, अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और संनिकर्ष; इन अनुयोगद्वारोंका कथन स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये ।

यहां अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है। उसमें ओघ उत्कृष्ट प्रदेश उदयका दण्डक- मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलाका संख्यातगुणा है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है। अनन्तानुबंधी कषायोंमें अन्यतरका विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरण-चतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है । प्रत्याख्यानावरणमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रचलाका असंख्यातगुणा है । निद्राका विशेष अधिक है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका संख्यातगुणा है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । देवायुका अनन्तगुणा है । नरकायुका विशेष अधिक है । मनुष्यायुका संख्यातगुणा हैं । तिर्यगायुका विशेष अधिक

विसे० । आहारसरी णामाए असंखे० गुणो । णिरयगइणामाए असंखे० गुणो । तिरिक्खगइणामाए विसे० । अजसगित्तीए विसे० । णीचागोदस्स संखे० गुणो । वेउव्विय-सरीरणामाए असंखे० गुणो । देवगइणामाए संखे० गुणो । दुगुंछाए असंखे० गुणो । भय० तत्तियो चेव । हस्स-सोग० विसेसा० । रदि-अरदि० विसे० । इत्थिवेदे✡ असंखे० गुणो । णवुंसयवेदे✡ विसेसा० । पुरिसवेद० असंखे० गुणो । कोधसंजलणाए असंखे० गुणो । माणसंजलणाए असंखे० गुणो । माया० असंखे० गुणो । ओरालिय-सरीर० असंखे० गुणो । तेजासरीर० विसेसाहिओ । कम्मइयसरीर० विसे० । मणुसगई० असंखे० गुणो । दाणंतराइयस्स असंखे० गुणो । लाहंतराइयस्स विसेसा० भोगंतरा० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । विरियंतराइयस्स विसेसा० । ओहि-णाणावरण विसे० । मणपज्जवणाणावरण० विसे० । ओहिदंसणावरण० विसे० । सुदणाणावरण० विसे० । मदिणाणावरण० विसे० । अचक्खुदंसणावरण० विसे० । जसगित्तिणामाए विसेसा० । उच्चागोदस्स विसे० । लोभसंजलण० विसे० । सादा-सादाणं विसे० । ओघुक्कस्सपदेसुदयदंडओ समत्तो ।

णिरयगईए उक्कस्सओ पदेसउदओ सम्मामिच्छत्तस्स थोवो । पयलाए संखेज्ज-

---

है । आहारकशरीर नामकर्मका असंख्यातगुणा है । नरकगति नामकर्मका असंख्यातगुणा है । तिर्यग्गति नामकर्मका विशेष अधिक है । अयशकीर्तिका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका संख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीर नामकर्मका असंख्यातगुणा है । देवगति नामकर्मका संख्यातगुणा है । जुगुप्साका असंख्यातगुणा है । भयका उतना मात्र ही है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिका विशेष अधिक है । स्त्रीवेदका असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदका विशेष अधिक है । पुरुषवेदका असंख्यातगुणा है । संज्वलनक्रोधका असंख्यात-गुणा है । संज्वलनमानका असंख्यातगुणा है । संज्वलनमायाका असंख्यातगुणा है । औदारिक-शरीरका असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कार्मणशरीरका विशेष अधिक है । मनुष्यगतिका असंख्यातगुणा है । दानान्तरायका असंख्यातगुणा है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञाना-वरणका विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । यशकीर्ति नामकर्मका विशेष अधिक है । उच्चगोत्रका विशेष अधिक है । संज्वलनलोभका विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । ओघ-उत्कृष्ट-प्रदेश-उदयदण्डक समाप्त हुआ ।

नरकगतिमें सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है । प्रचलाका संख्यातगुणा है ।

✡ अ-काप्रत्योः 'वेदो' इति पाठः ।